चन्दामामा
जून १९९२
4 रु

नई उमर के नये रंग

मौज ही मौज
स्कूल में आए
नए फ़ेविक्रिल
स्टूडेंट पोस्टर कलर्स
ऐसा रंग जमाएं
रंग मुलायम उभरा-उभरा
तोता–हरा-हरा लगे खरा
चटख लाल, नीला,
चमकीला
सफेद निराला ज्यों बर्फीला
हर रंग अलबेला
तो झटपट चित्रों में रंग भरो
नए फेविक्रिल स्टूडेंट
पोस्टर कलर्स के संग
मौज करो !

मुफ़्त
पेंट-ए-पोस्टर

की ओर से

नाम : ______________ उम्र : ______________
पता : ______________
____
स्कूल ______________

THEY'RE NOT ALLOWED TO EAT THIS YUMMY NEW JAM FROM VOLFARM

BECAUSE (MMMM!) IT'S FAR TOO GOOD FOR THEM

New Volfarm Jam is made just for kids.
So, naturally, it's made just the way kids like it.
With the yummiest, juiciest fruits (Slurp, slurp!)
Tell all those adults to keep their hands off it!

NOW

Vólfarm

JAMS

MIXED FRUIT PINEAPPLE

कीजिए एक कामयाब शुरूआत
लाइए

लायन

प्रीमियर® एच बी पेंसिल

बेहद सहजता से लिखें. माइक्रोनाइज़्ड लैड के कारण नोंक न टूटे.
एक्जेक्यूटिव और हर एक की टेबल की खूबसूरती में
चार-चांद लगाएं!

LPP LTD • PREMIER • 261 • HB •

लायन

पिंकी® पेंसिल

आपकी सच्ची दोस्त. आकर्षक. लिखाई करे बेहतरीन.
सुंदर डिज़ाइनें. न टूटने वाली नोंक के लिए मज़बूती
से बॉण्ड की गई लैड. हर मुकाबले में बाज़ी जीतें!

लायन Geeflo® बॉल पेन

035 carbine 050 carborite

टंगस्टन कार्बाइड टिप्स

स्विस टेक्नालॉजी से बनी. सुरेख पॉइंट.
स्पष्ट और साफ़ लिखावट. सहजता से चले.
फटाफट लिखें. लाल, काली और नीले रंगों की रीफ़िल.
मुनासिब कीमत पर नन्हा करिश्मा!
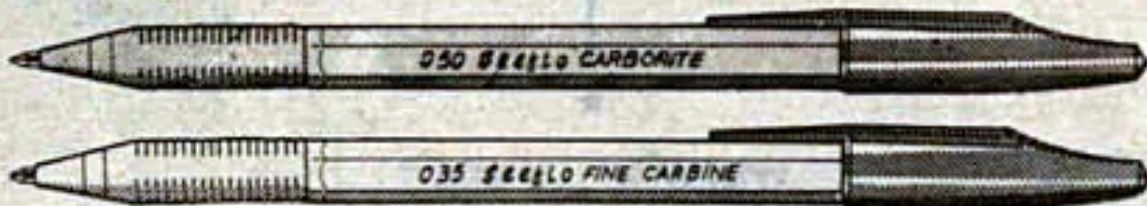
लायन पेंसिल्स लि.
९५, पारिजात, मरीन ड्राइव, बम्बई ४०० ००२.

OFFICIAL
LICENSEE
OF THE
WORLD CUP

National-766HIN.

जून १९९२

★

अगले पृष्ठों पर

★

एक प्रति : ४ रुपये
वार्षिक चन्दा : ४८ रुपये

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

भूमि संरक्षण की ओर

जून के शुरू में रियो डी जानीरो (Rio De Janeiro) में जो भू-शिखर सम्मेलन होने जा रहा है, उसकी तरफ सब की आंखें लगी हुई हैं। उम्मीद की जाती है कि हमारे ग्रह के संरक्षण की दिशा में उसमें बहुत महत्वपूर्ण निर्णय लिये जायेंगे।

इन दिनों प्रचार माध्यमों में हमें ऐसे शब्द मिल रहे हैं जैसे-ग्लोबल वार्मिंग (पृथ्वी का गरम होना), ग्रीन हाउस (हरित गृह), गैस का निकलना, ओज़ोन होल्स (ओज़ोन छिद्र) तथा जलवायु परिवर्तन। हालांकि इन सब का अर्थ अलग-अलग है, पर ये सब एक ही ख़तरे की तरफ़ इशारा करते हैं-कि पृथ्वी मर रही है और यह जल्दी ही टुकड़े-टुकड़े हो जायेगी, अगर वर्तमान पीढ़ी और आने वाली पीढ़ी द्वारा पृथ्वी संरक्षण की दिशा में तुरंत कोई कार्यवाही न की गयी। दरअसल कार्बन डायओक्साइड बहुत बड़े पैमाने पर निकल रही है और यह सभी जीवों की-चाहे वे मनुष्य हों, पशु हों या पौधें-जान लेने की क्षमता रखती है।

हमारा जीवन प्रकृति में संतुलन बने रहने पर ही क़ायम रह सकता है। पिछले कई वर्षों से जंगलों को अंधाधुंध साफ़ किया जा रहा है। इसलिए लोगों से अब कहा जा रहा है कि वे क्षतिपूर्ति वृक्षारोपण की सोचें।

यदि लोग अपने प्रियजनों की याद में ही पेड़ लगाना शुरू कर दें तो यह बहुत श्रेष्ठ और भावनापूर्ण होगा। उत्तर प्रदेश सरकार ने, लगता है, स्मृति वन को बढ़ावा देने के लिए एक योजना शुरू की है जिससे वह पड़ोस में जंगल खड़े करना चाहती है। यह एक नया विचार है जिसकी ओर हर किसी का ध्यान आकृष्ट होना चाहिए।

वर्ष : ४४ | जून १९९२ | अंक : १०

एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

अपने प्यारे चहेते के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

चन्दामामा

प्यारी-प्यारी सी चंदामामा दीजिए उसे उसकी अपनी पसंद की भाषा में—
आसामी, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल या तेलुगु
—और घर से अलग कहीं दूर रहे उसे लूटने दीजिए घर की मौज-मस्ती

चन्दे की दरें (वार्षिक)

आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और श्रीलंका के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 105.00 वायु सेवा से रु. 216.00

फ्रान्स, सिंगापुर, यू.के., यू.एस.ए.,
पश्चिम जर्मनी और दूसरे देशों के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 111.00 वायु सेवा से रु. 216.00

अपने चन्दे की रकम डिमांड ड्रॉफ्ट या मनी ऑर्डर द्वारा
'चन्दामामा पब्लिकेशन्स' के नाम से निम्न पते पर भेजिए:

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

मॉरिशस का नया अध्याय

इंगलैंड की महारानी अब मॉरिशस की शासनाध्यक्ष नहीं हैं। इसी वर्ष १२ मार्च को इस देश ने अंगरेज़ साम्राज्ञी को अलविदा कहा और

यह एक संपूर्ण गणतंत्र बन गया। लेकिन भारत की तरह यह भी ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का सदस्य बना रहेगा।

ठीक २४ वर्ष पहले, १२ मार्च, १९६८ को, मॉरिशस को ब्रिटिश शासन से मुक्ति मिली थी, लेकिन महारानी का प्रतिनिधित्व, उसी के द्वारा नियुक्त, गवर्नरजनरल के माध्यम से होता रहा था। पहले प्रधान मंत्री सर शिवसागर रामगुलाम थे, जिन्हें आम जनता राष्ट्रपिता मानती है। उनके बाद १९८२ में श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ प्रधान मंत्री बने और साथ ही उन्होंने शपथ ली कि वह मॉरिशस को राष्ट्रमंडल के अंतर्गत एक गणतंत्र बनायेंगे।

१९८३ में पहली बार एक गैर-ब्रिटिश को इस देश का शासनाध्यक्ष बनाया गया। वह सर शिवसागर रामगुलाम ही थे। १९८५ में उनका

देहांत हो गया।

उनके बाद सर वीरास्वामी रिंगडू गवर्नर-जनरल बने। १९८७ के चुनाव के बाद श्री जगन्नाथ ने एक मिली-जुली सरकार का गठन किया। गणतंत्र घोषित होने के बाद वह उसके प्रधानमंत्री ही बने रहे, लेकिन सर वीरास्वामी को अब राष्ट्रपति कहा जायेगा। इस नये गणतंत्र का संविधान भारत के संविधान के अनुरूप होगा। लेकिन इसकी संसद का केवल एक ही सदन होगा।

१८६५ वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाला यह टापू अपने से बहुत बड़े मैडगास्कर (५ लाख ८७ हजार वर्ग कि.मी.) के पूर्व में अफ्रीका के तट से हटकर

है। विश्वास किया जाता है कि दसवीं शताब्दी में किसी समय इस टापू की अरब नाविकों ने खोज की थी। ६०० वर्ष बाद यहां पुर्तगाली आये, और इसके बाद १६ वीं शताब्दी के अंत में यहां डच आये। डच लोगों ने यहां बसकर खेतीबाड़ी शुरू की और इस टापू को व्यापार के लिए उपयोग में लाने लगे। सौ साल बाद वे यहां से चले गये और उनकी जगह फ्रांसीसियों ने ले ली। लेकिन १८१० में यहां इंगलैंड के लोग आ बसे, और फिर कहीं डेढ़ सौ वर्ष बाद इसे आजादी मिली।

मॉरिशस की ६८ प्रतिशत जनसंख्या, यानी ११ लाख लोग, भारतीय मूल के हैं। यहां की सरकारी भाषाएं तो अंगरेजी या फ्रैंच हैं, लेकिन तमिल, हिंदी, गुजराती, उर्दू और भोजपुरी यहां आम उपयोग में आती हैं। मॉरिशस के इर्द-गिर्द कई छोटे-छोटे टापू हैं और हर टापू में शिव, गणेश तथा मुरुगा के मंदिर हैं। हर वर्ष होने वाले तैपूसम कावड़ी तथा चित्र कावड़ी उत्सव भारी संख्या में लोगों को अपनी ओर खींचते हैं। यहां नादस्वरं और थविल, जिन्हें आम भाषा में मद्रासी भेरी और ढोल कहा जाता है, बजाये जाते हैं। महाशिवरात्री, होली तथा दिवाली धूमधाम से मनायी जाती है।

पर्यटकों की दृष्टि में मॉरिशस हिंद महासगर में मोती के समान है, लेकिन यह अपने वानस्पतिक उद्यानों के लिए भी विख्यात है। इन्हें पांपलेमूस वानस्पतिक उद्यान कहते हैं। यहां पर एक ऐसा ताड़ का पेड़ है जिस पर साठ वर्ष में एक बार फूल आते हैं। यह विदेश से लाया गया था। यहां पर ऐसी जल-कुमुदनियां भी हैं जो बहुत बड़ी तैरती तश्तरियों की तरह दिखाई देती हैं। यहां एक पुराना ज्वालामुखी गह्वर भी है जो २०० मीटर चौड़ा और पांच मीटर गहरा है।

मॉरिशस की दृश्यावली से अमरीका का जाना-माना लेखक मार्क ट्वेन (१८३५ से १९१०) इतना प्रभावित हुआ कि वह एकाएक कह उठा, "मॉरिशस को देखकर ही स्वर्ग तैयार किया गया होगा!"
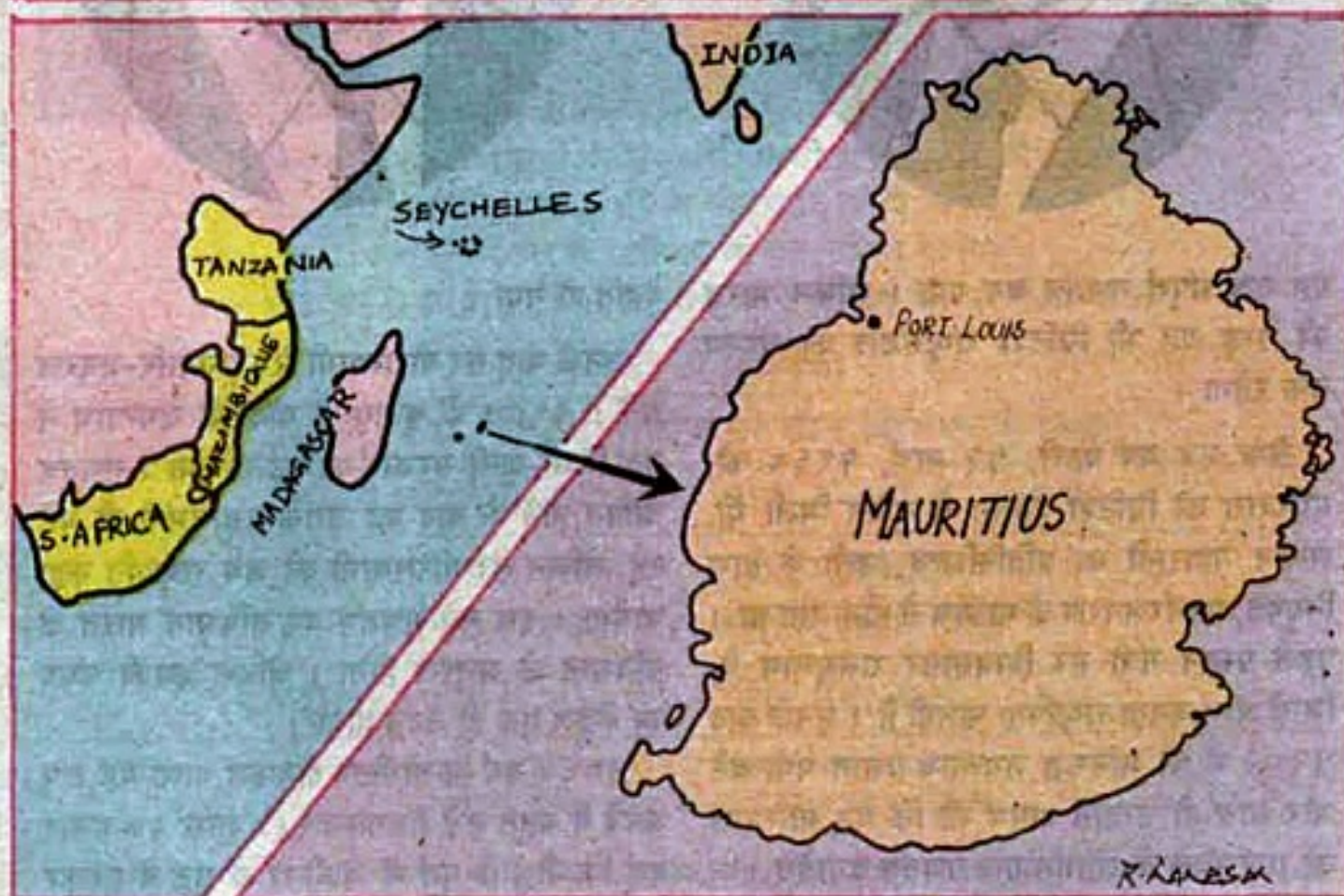
मीठा पकवान

सीतापुर में श्रीकंठ नाम का एक नामी व्यापारी रहता था। उसके एक बेटा और एक बेटी थी। बेटे का नाम श्रीनाथ था और बेटी का श्रीवल्ली। श्रीनाथ जैसे ही सयाना हुआ, उसने अपने पिता के काम में हाथ बंटाना शुरू कर दिया। वह बहुत ही योग्य था। इसलिए दूर-दूर से उसके लिए शादी के रिश्ते आने लगे।

एक दिन श्रीकंठ की पत्नी, भानु, ने अपने पति श्रीकंठ से कहा, "बेटे का हम जल्दी से विवाह कर दें तो अच्छा होगा। रामपुर वालों ने खबर भेजी है कि वे एक लाख रुपये का दहेज भिजवाने को तैयार हैं।"

इस पर श्रीकंठ ने मुस्करा कर कहा, "बेटे के लिए हम यह नया रिश्ता कैसे तय कर सकते हैं? सुदर्शन की बेटी, सुलोचना, के लिए पहले ही बात हो चुकी है।"

पति की बात सुनकर पत्नी का चेहरा लटक गया। पंद्रह वर्ष पूर्व सुदर्शन से धन लेकर ही श्रीकंठ ने व्यापार शुरू किया था। कर्ज़ देते समय सुदर्शन ने स्पष्ट कर दिया था कि इस राशि को कर्ज़ न माना जाये। तब श्रीकंठ ने उससे कहा था, "अच्छा, मेरी एक बात सुनो। जब तुम्हारी बेटी सयानी हो जायेगी, तब मैं उसे अपनी बहू बना लूंगा।"

लेकिन इस बीच वक्त पलटा खा गया। सुदर्शन अब वह सुदर्शन नहीं था। उसके सब साधन लुप्त हो चुके थे। वह लगभग निर्धन हो गया था। उधर भानु नहीं चाहती थी कि एक लाख रुपये को हाथ से जाने दिया जाये। इसलिए उसने पति से कहा, "विवाह का मामला है। हम अपने लड़के पर किस तरह यह प्रतिबंध लगा सकते हैं कि वह किसी ख़ास लड़की से शादी करे!"

"प्रतिबंध वाली तो कोई बात नहीं।

सरस्वती माथुर

अगर श्रीनाथ को सुलोचना पसंद नहीं आयी तो मैं उस लड़की का किसी और लड़के के साथ विवाह कर दूंगा, और जो दहेज देना पड़ेगा, वह भी दूंगा । यह शादी पूरी धूमधाम के साथ होगी ।" श्रीकंठ ने अपने मन की बात साफ-साफ कह दी ।

अगले दिन ही वे सुलोचना को देखने के लिए चल पड़े । श्रीनाथ को वह बहुत पसंद आयी । सुलोचना ने भी श्रीनाथ को पसंद किया । वह उनके घर में बहू बन कर आ गयी ।

छः महीने तक सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा । सुलोचना अपने भाग्य पर बहुत खुश थी । पर अचानक एक दिन उसके श्वसुर, श्रीकंठ, की मृत्यु हो गयी और उसके कष्टों का सिलसिला शुरू हो गया । पिता की मृत्यु के कारण श्रीनाथ का दायित्व बहुत बढ़ गया था । वह अक्सर घर लौट ही नहीं पाता था । इसलिए सास और ननद का सुलोचना पर ज़ुल्म ढाने का अच्छा मौका मिल गया ।

सास अपनी बहू पर उलटी-सीधी बातों से वार करती और उसे ज़्यादा से ज़्यादा चोट पहुंचाने की कोशिश करती । वह अक्सर ताने मारती, "लाखों का दहेज हमें मिल रहा था । हमने उसे ठुकरा दिया और इस महादरिद्र को अपने यहां बहू बना कर ले आये ।"

ननद का वार करने का अपना ढंग था । वह उंगलियां चटकाती हुई कहती, "घर में कदम रखे अभी मुश्किल से छः महीने ही बीते हैं कि इस घर को श्मशान बना दिया ।"

सुलोचना को ये सब ताने और ऊल-जलूल बातें तो सुननी ही पड़तीं, रसोईघर का सारा बोझ भी उसी पर आ पड़ा था । सुलोचना की सास, भानु, को यह सब, ढेर सारा काम, करवाना अच्छा भी लगता था । इससे उसके मन की भड़ास कुछ हद तक शांत होती । उधर श्रीवल्ली अपनी भाभी के काम में हाथ बंटाना तो दूर रहा, उलटे उस पर हुक्म चलाती रहती कि यह लाओ, वह लाओ । इस पर भी सुलोचना विचलित नहीं होती थी । उस पर जो अत्याचार हो रहे थे, अपने पति को उनकी भनक तक भी न होने देती ।

एक बार सुलोचना को ज़ोर का बुखार

आया। वह सरदी से दुहरी हुई जा रही थी। इस पर भी उसे घर का सारा काम निपटाना था। उसकी सास और ननद ने घर से दस मील दूर, एक पहाड़ी पर स्थित, एक देवी के मंदिर पर जाने का निश्चय कर लिया था।

और जब निश्चय कर ही लिया था तो उन्होंने रात को ही सुलोचना को बता देना ठीक समझा। सास बोली, "सुबह-सुबह हम गाड़ी से निकलेंगे, तब कहीं रात को देर से लौट पायेंगे। उस पहाड़ी पर खाने को कुछ नहीं मिलता। इसलिए तुम तड़के ही उठ जाना और हमारे लिए मीठा पकवान बना कर बांध देना।"

दूसरे दिन तड़के ही सुलोचना उठ गयी। उसे सास और ननद के लिए मीठा पकवान बनाने की याद थी। लेकिन वह चार कदम भी न चल पायी कि सामने की मेज़ से जा टकरायी। कमजोरी तो उसे थी ही, इसलिए चक्कर खाकर जैसे ही वह गिरी, वैसे ही श्रीनाथ की आंख खुल गयी। उसने फौरन उसे संभाला और उसे बिस्तर पर बैठाते हुए प्यार से बोला, "इतनी जल्दी उठने की क्या ज़रूरत थी?"

तब सुलोचना ने पति को बताया कि सास और ननद को अभी गाड़ी से देवी के मंदिर जाना है और उसे उनके लिए मीठा पकवान तैयार करना है।

पत्नी की बात सुनकर श्रीनाथ बोला, "तुम बहुत कमज़ोर दिखती हो। वह पकवान मैं बनाये देता हूं। तुम सो जाओ।" और पत्नी को जबरदस्ती बिस्तर पर लिटा

कर श्रीनाथ स्वयं रसोईघर में चला गया।

थोड़ी देर में ही वह पकवान तैयार हो गया। वह अभी गरम ही था। उसे एक बर्तन में रखकर श्रीनाथ अपनी पत्नी को देते हुए बोला, "जाओ, इसे मां को दे आओ। लेकिन हां, एक बात का ख्याल रखना, उसे यह मत बताना कि इसे मैंने बनाया है।"

सुलोचना ने वैसा ही किया जैसा उसके पति ने बताया था। सास और ननद किराये की एक गाड़ी से देवी के मंदिर के लिए रवाना हो गयीं। श्रीनाथ ने भी खाना खाया और वह अपने काम पर चला गया। इधर सुलोचना बिना खाना खाये दरवाजा बंद करके सो गयी।

रात जब काफी हो गयी तो दरवाज़े पर खटखट हुई। सुलोचना ने उठकर दरवाज़ा खोला। सामने सास और ननद खड़ी दीख पड़ीं।

घर में घुसने से पहले ही श्रीवल्ली ने वार किया, "हमें भूख से मारना चाहती थी! तभी ऐसा पकवान तैयार किया।" उसका गुस्सा सातवें आसमान पर था।

अब बारी सास की थी। उसने सुलोचना की बांह पकड़ ली और उसे झटकते हुए बड़ी तुर्शी से बोली, "दोपहर को जब ज़ोरों की भूख लगी तो हमने सोचा, बहुत बढ़िया पकवान खाने को मिलेगा। हमारे मुंह में दूध, काजू, किशमिश और इलायची का स्वाद आ रहा था। लेकिन जब पकवान मुंह में डाला तो एकदम से थूक देना पड़ा। शक्कर का उसमें नामों-निशान तक न था। मैं सब समझती हूं। यह शरारत तुमने जानबूझकर की है।"

उसी समय श्रीनाथ भी घर पहुंच गया। उसने हंसते हुए कहा, "क्या बात है, मां? लगता है तुम्हें अपनी बीमार बहू पर बहुत गुस्सा आ रहा है।"

बेटे को इस तरह हंसता देखकर और उसकी बात सुनकर भानु ने कहा, "इस घर में किस चीज़ की कमी है। ऐसी-ऐसी कीमती साड़ियां और ऐसे-ऐसे ज़ेवर क्या इसने पहले कभी देखे थे? क्या तकलीफ है इसे इस घर में? क्यों परेशान करती है यह हमेशा ऐसे ही मुझे और अपनी ननद को?"

"मां, कौन किसे परेशान कर रहा है,

यह तो मैं नहीं जानता । हां, तुमने जो दूध और काजू की बात कही, वह मैंने ज़रूर सुनी । जैसे शक्कर के न रहने पर दूध और काजू जैसी चीज़ें भी बदमज़ा हो जाती हैं, वैसे ही घर में सब कुछ होते हुए अगर प्रेम न हो तो यह घर घर नहीं रहता और यह जीवन भी निरर्थक लगने लगता है । यह मीठा पकवान मैंने ही तैयार किया था, और यह जताने के लिए मैंने ही जानबूझकर इसमें शक्कर नहीं डाली थी ।" श्रीनाथ एक ही सांस में सब कुछ कह गया ।

"तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि हम सुलोचना से प्यार नहीं करते?" भानु आवेश में आ गयी थी ।

"मैंने जो कहना चाहा, वह बहुत जल्दी ही तुमने समझ लिया । जब बहू ज्वर से पीड़ित हो और सास और ननद मंदिर जाने पर उतारू हों, और सास ज्वर से पीड़ित बहू से कहे कि तड़के उठकर मीठा पकवान तैयार कर देना-तो तुम इसे प्रेम कहोगी? इसका मतलब तो यह हुआ कि भला और बुरा तुम्हारे लिए एक समान है । अब जो मैं कह रहा हूं उसे ध्यान से सुनो । यदि तुम सब मिलकर नहीं रह सकती तो मुझे साफ बता दो । हम पति-पत्नी अपना अलग इंतज़ाम कर लेंगे ।" श्रीनाथ अब गुस्से में आ गया था ।

श्रीनाथ के ये शब्द भानु और श्रीवल्ली पर गाज की तरह पड़े । तभी सुलोचना बीच में बोल पड़ी, "आप यह क्या कह रहे हैं । जब तक मैं ज़िंदा हूं, अलग घर बसाने की बात सोच भी नहीं सकती । घर की समस्याओं से निपटना हमारा काम है । आप अपने व्यापार से निपटिए ।"

अब भानु समझ गयी थी कि उसकी बहू सुलोचना कितनी सुलझी हुई है । उसने यह भी जान लिया था कि धन से भी ज्यादा मनुष्यों के बीच प्रेम काम करता है । उसने कहा, "बेटे, तुमने जो पकवान बनाया, उसने हमारी आंखें खोल दीं । आइंदा इस घर में इस तरह की बात कभी नहीं होगी ।" और यह कहकर भानु ने सुलोचना को अपने गले लगा लिया ।

मल्लाह का चुनाव

चंद्रगिरी के ज़मींदार को एक नौका खेने वाले मल्लाह की ज़रूरत पड़ी। उसे काफी अनुभवी मल्लाह चाहिए था, क्योंकि वह शाम के समय नाव में बैठकर नदी की सैर किया करता था और जिस नदी में वह सैर किया करता था, वह पहाड़ों से होकर गुज़रती थी, इसलिए बहुत तेज बहती थी।

दीवान ने कई मल्लाहों की जांच-परख की। आखिर उसे प्रसाद और परमेश नाम के दो मल्लाह ही बेहतर लगे। वह उन्हें ज़मींदार के पास ले गया और उससे बोला, "हुज़ूर, यह प्रसाद है। नाव खेने में बेजोड़ है। बहुत कुशल तैराक भी है। नाव खेने में परमेश भी कुछ कम नहीं, लेकिन इसे तैरना नहीं आता।"

दीवान की बात सुनकर ज़मींदार ने उन्हें अगले दिन आने के लिए कहा।

जब वे दोनों चले गये, तब ज़मींदार ने दीवान से कहा, "कल जब ये दोनों आयें तो तुम परमेश से कहना कि उसे नौकरी मिल गयी है।"

ज़मींदार की बात सुनकर दीवान चौंका, "कुशल तैराक प्रसाद को छोड़कर परमेश को नौकरी पर क्यों रखना चाहते हैं? उसे तैरना बिलकुल नहीं आता।"

"मैं स्थिति समझ रहा हूं। इसीलिए नौकरी मैंने परमेश को दी है।" ज़मींदार ने कहा। "नाव खेने में दोनों बराबर हैं। लेकिन जो तैरना जानता है, वह नाव खेने में सावधानी नहीं बरतेगा। खतरा होगा तो वह झट से अपनी जान बचाने के लिए नदी में कूदकर बाहर आ जायेगा। लेकिन दूसरी तरफ परमेश है। उसे तैरना तो आता नहीं। इसलिए यह नाव बड़ी सावधानी से चलायेगा। ऐसे मल्लाह के हाथों न केवल मेरा जीवन सुरक्षित रहेगा, बल्कि उसका अपना भी। ठीक कह रहा हूं न, दीवान जी?" ज़मींदार ने हंसते हुए कहा।

"अब आयी बात मेरी समझ में। मैंने तो यह सब सोचा ही नहीं था। आप मुझे क्षमा करें।" और दीवान अपने को बहुत लज्जित अनुभव करता हुआ वहां से चला गया। — कु. गौमती

[राजकुमारी विद्यावती सत्रह वर्ष की हो रही है । वीरगिरी उसका जन्म दिवस मनाने की तैयारी कर रहा है । लेकिन एकाएक सभी तैयारियां रद्द कर दी जाती हैं, क्योंकि राजकुमारी बीमार पड़ गयी है । राज ज्योतिषी के कहने पर राजकुमारी को झील के बीचोंबीच बने एक महल में ले जाया जाता है । दो महीनों बाद राजकुमारी अचानक अदृश्य हो गई । अदृश्य हो जाने के पहले...]

राजा वीरसेन और रानी वज्रेश्वरी राजकुमारी विद्यावती के साथ महल के मुख्य द्वार तक ही आये, और वहीं खड़े होकर अपनी बेटी को सारस सरोवर की ओर बढ़ते देखते रहे । राज ज्योतिषी वाचस्पति ने उन्हें विशेष रूप से चेतावनी दी थी कि वे राजकुमारी के साथ सारस सरोवर तक नहीं जायें । जब राजकुमारी उनकी नज़र से ओझल हो गयी तो वे पीछे की ओर मुड़े और महल के भीतर जाने को हुए ।

आखिर वे अपने कक्ष में पहुंचे । वहां पहुंचकर रानी अपने बिस्तर पर लुढ़क गयी और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी ।

"ज्योतिषी ने जो बताया था वह याद है?" राजा ने उसे कुछ याद दिलाते हुए कहा । "वह पहले आचार्य जगतपति से सलाह-मशविरा करेगा, और फिर हमें बतायेगा कि किस शुभ दिन हमें वहां जाना चाहिए । अब सब उसी पर छोड़ दो, और धैर्य बनाये रखो । उसने तो पहले ही कह

दिया था कि यह हमारा प्रायश्चित्त है । अगर इससे अपनी प्यारी बच्ची को हम किसी तरह बचा सकें तो इस कष्ट को उठाने में भी कोई हर्ज नहीं ।"

अब तक उनकी एक परिचारिका नाविक का संदेश लेकर लौट आयी थी । उसका नाम शालिनी था । उसने बताया कि राजकुमारी और कमला, दोनों, उस द्वीप पर सकुशल पहुंच चुकी हैं । उसने यह भी कहा कि अगर राज ज्योतिषी मालिनी और उसे राजकुमारी के साथ रहने की आज्ञा दे देता तो वे राजकुमारी के लिए हर तरह से उपयोगी होतीं । बेचारी कमला अकेली क्या क्या करेगी?

रानी ने उसे बीच में ही टोका और बोली, "नहीं, कमला विद्यावती को तब से जानती है जब उसका जन्म हुआ था । दूसरे, वहां करने को ज़्यादा कुछ है भी नहीं । विद्यावती को पूरा आराम चाहिए, और कमला का हवा-पानी भी बदलना चाहिए ।" यह कहकर रानी चुप हो गयी और इंतज़ार करने लगी कि कब शालिनी उनके कक्ष से बाहर जायेगी । वह जैसे ही गयी, रानी फिर बिस्तर पर लेट गयी । लेकिन वैसे वह जगी रहने की कोशिश करती रही । उसे यह सोच भी थी कि जब दिन चढ़ेगा, तब उसे कैसा लगेगा । फिर धीरे-धीरे नींद ने उस पर काबू पा लिया ।

शालिनी और मालिनी, सुबह-सुबह फिर गयीं और फिर वही नाविक उन्हें सरोवर के बीच महल तक ले गया । फिर वह उन्हें वापस ले जाने के लिए इंतज़ार भी करता रहा ।

वहां पहुंचकर उन्हें पता चला कि रात को विद्यावती आराम से सोयी थी । उन्होंने उसकी स्नान करने में मदद की और उसे खाना भी खिलाया । वे दोनों परिचारिकाएं वहां राजकुमारी के पास और ठहरना चाहती थीं, लेकिन रानी का आदेश था कि उन्हें वहां उतने समय तक ही रुकना चाहिए जितना कि आवश्यक है । इसलिए वे तुरंत महल को लौट गयीं । वहां राजा और रानी अपनी बेटी के बारे में समाचार पाने के लिए उतावले हो रहे थे । उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि स्थान-परिवर्तन का

असर उनकी बेटी पर अच्छा पड़ा है, और वह असर नज़र भी आ रहा है ।

ऐसा ही क्रम बना रहा । दूसरे दिन दो अन्य परिचारिकाएं, नंदिनी और देवयानी, राजकुमारी को देखने गयीं । तीसरे दिन शारदा और शांता की बारी आयी । हर रोज़ परिचारिकाएं अच्छी से अच्छी खबर लाती रहीं और यही कहती रहीं कि राजकुमारी बड़ी तेज़ी से स्वस्थ होती जा रही है ।

तीन सप्ताह बीत चुके थे । राजा और रानी अब इसी इंतज़ार में थे कि राज ज्योतिषी उन्हें आदेश दे और वे अपनी बेटी से मिलने जायें । जब सेवकों ने राजा को बताया कि आचार्य वाचस्पति उनसे भेंट करने के लिए इंतज़ार कर रहे हैं तो वह बड़ी तत्परता से बोला कि उसे भीतर लाया जाये ।

राज ज्योतिषी उन्हें देखते ही ताड़ गया कि वे किस बेसब्री से उसकी राह ताक रहे थे, क्योंकि उनके चेहरों पर गहरा दुःख झलक रहा था । वह उनकी ओर आश्वासन-भरी मुस्कान से देखकर बोला, "हुज़ूर, आप कल राजकुमारी से मिल सकते हैं । दोपहर के बाद कोई भी समय ठीक रहेगा । लेकिन मैं आपको एक सलाह दूंगा-आप सूरज डूबने से पहले महल को लौट आयें ।"

"ज्योतिषी जी, आपने पहले ही काफी इंतज़ार करवाया है," रानी वज्रेश्वरी ने कहा । "हम दोनों से अब अपनी बेटी की जुदाई बर्दाश्त नहीं हो पा रही ।"

रानी की बात सुनकर राजा ने उसे शांत करते हुए कहा, "लेकिन रानी, सिर्फ एक

और दिन की तो बात है । कल हम उससे मिलेंगे ही । अब धैर्य रखो ।" फिर वह ज्योतिषी की ओर मुड़ा और बोला, "क्या ग्रहों की स्थिति में कोई अंतर आया है, ज्योतिषी जी? क्या आपने अपने मित्र आचार्य जगपति से इस बारे में बात की थी? उसका क्या कहना है?"

"राजन्, उन्होंने मेरे संदेह की पुष्टि की है । बृहस्पति, मंगल और शनि, तीनों ग्रह एक ही घर में बैठे चंद्रमा पर दृष्टि डाले हुए हैं । लेकिन राजकुमारी इस समय सूर्य के शुभ प्रभाव में है । जगतपति के अनुसार यह स्थिति अगले चालीस-पचास दिनों तक बनी रहेगी, और राजकुमारी का स्वास्थ्य धीरे-धीरे सुधरता जायेगा । अब आप दोनों के लिए चिंता की कोई बात नहीं । चिंता करना व्यर्थ है । कल जब आप राजकुमारी को देखेंगे तो आपको स्वयं ही चैन मिल जायेगा ।"

अब राजकुमारी को सारस सरोवर महल में आये इक्कीस दिन हो गये थे । राजा और रानी ने फैसला किया कि वे शाम को ही राजकुमारी के पास जायेंगे, क्योंकि तब तक राजकुमारी दोपहर में आराम कर चुकी होगी ।

जिस समय राजा और रानी नाव की ओर बढ़ रहे थे, लोग रास्ते की दोनों तरफ पंक्तिबद्ध खड़े थे । जैसे ही वे सारस सरोवर द्वीप के विश्राम महल पर पहुंचे, कमला ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया और उन्हें वहीं लिवा ले गयी जहां राजकुमारी बैठी अपने बालों में कंघी कर रही थी । दरअसल, राजकुमारी उसी समय बिस्तर से उठी थी । अपने माता-पिता को वहां देखकर वह खुशी से दीवानी हुई जा रही थी । वे स्वयं अपनी बेटी को बिलकुल ठीक-ठाक देखकर बहुत खुश थे । बल्कि उन्हें लगा कि उसका चेहरा चमचमा आया है । वे उसे बाहर वाटिका में ले गये जहां वह उनके साथ टहलती रही । और उन चन्द घंटों में रानी हर वक्त राजकुमारी का हाथ थामे रही ।

अभी अंधेरा उतरने में काफी देर थी जब उन्होंने राजकुमारी से विदा ली । कमला उन्हें नाव तक छोड़ने आयी ।

तीन सप्ताह और बीत गये । ज्योतिषी

ने फिर राजकुमारी से मिलने के लिए शुभ दिन निकाला । विद्यावती को भी अपनी सेविकाओं से पता चल गया कि उसके माता-पिता उससे मिलने आ रहे हैं । इसलिए जैसे ही वे नाव से उतरे, उसने स्वयं उनकी अगवानी की ।

पर जितनी देर तक वे उसके साथ रहे, उन्होंने उसके स्वास्थ्य के बारे में कोई बात नहीं की । स्पष्ट ही था कि इस परिवर्तन से उसे बहुत लाभ हुआ है । उसी के कहने से वे उसके पास ज़्यादा देर तक रुके और जब राजा और रानी महल को लौटे तो काफी शाम हो गयी थी ।

अब तीन सप्ताह और बीत चुके थे । लेकिन राज ज्योतिषी का कोई संदेशा नहीं आया था । "क्या हम स्वयं ज्योतिषी के यहां किसी को भेजें, स्वामी?" रानी ने राजा से आग्रह किया ।

"नहीं, रानी," राजा ने उसे मना किया, "यह सारा मामला अब ज्योतिषी के हाथों ही छोड दो । हमें धैर्य ही रखना चाहिए, और यह भी याद रखना चाहिए कि हम अपनी प्यारी बेटी के कष्ट-निवारण के लिए प्रायश्चित्त कर रहे हैं । एक-दो दिन और इंतज़ार कर लो । और हमें चिंता की बात है भी क्या, वैसे भी सेविकाएं अभी तक कोई ऐसा-वैसा समाचार नहीं लायी हैं ।"

लेकिन उन्हें ज्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा, क्योंकि स्वयं ज्योतिषी वाचस्पति उसी शाम महल में चला आया । उसके साथ आचार्य जगतपति भी था । उसे देखकर राजा खुश हो गया, क्योंकि अब एक के बजाय

दो व्यक्ति उसे राजकुमारी के भविष्य के बारे में आश्वस्त करने आये थे। आचार्य के प्रति भी राजा ने उतना ही सम्मान व्यक्त किया।

प्रारंभिक बातचीत के बाद राज ज्योतिषी ने राजा से कहा, "राजन्, आप कल सुबह ही वहां जा सकते हैं।"

राजा को ज्योतिषी के शब्दों में कुछ ज़्यादा ही जल्दबाज़ी दिखी। वह उसे समझने की कोशिश कर ही रहा था कि आचार्य जगतपति बोल उठा, "मैं तो कहूंगा, हुज़ूर, आपको जल्दी से जल्दी जाना चाहिए, क्योंकि अगर शुभ दिवस, हो सकता है, फिर नब्बे दिनों तक न आये। अगले तीन-चार महीने राजकुमारी के लिए बड़े कष्ट के हैं। मैं उसके स्वास्थ्य की चर्चा नहीं कर रहा। स्वास्थ्य की दृष्टि से तो वह ठीक रहेगी, इतना मैं आश्वासन दे सकता हूं, लेकिन..." जगतपति ने अपना वाक्य पूरा नहीं किया।

रानी उस समय वहां नहीं थी। राजा मन ही मन सुबह-सुबह निकलने की योजना बना रहा था। इसलिए उस अपूर्ण वाक्य में छिपे संकट की ओर वह ध्यान नहीं दे पाया।

जब दोनों आचार्य वहां से चले गये तो राजा ने वह बात रानी को बतायी। रानी एकदम चिंताग्रस्त हो गयी और बोली, "उसने बताया नहीं, स्वामी, कि कष्ट के समय से उसका क्या अभिप्राय था?"

"नहीं," राजा ने कहा, "खैर, कल सुबह हम उससे मिल ही रहे हैं। वहां से लौटकर मैं आचार्य वाचस्पति को बुलवाऊंगा। चिंता मत करो, रानी।"

राजा और रानी को इतनी सुबह देखकर नाविक चक्कर में पड़ गया। पहले तो राजा-रानी इतनी सुबह अपनी बेटी से मिलने कभी नहीं आये थे! सूरज अभी क्षितिज में उग ही रहा था। विश्राम महल को जाने वाली सीढ़ियों पर उनका साक्षात्कार करने के लिए भी कोई नहीं था, न राजकुमारी, न कमला ही।

राजा-रानी को इसमें कुछ अटपटा नहीं लगा, क्योंकि अपने इस तरह के आगमन

के बारे में सूचना देने का उन्हें कोई अवसर ही नहीं मिला था।

आखिर, उन्हें कमला दिखाई दी। वह उन्हें देखकर बिलकुल भौचक हो रही थी। "तो आपको इसका पहले ही पता चल गया था, महाराज?" उसने अपना प्रश्न उनकी ओर बढ़ाते हुए कहा।

"कमला, क्या कह रही हो?" रानी वज्रेश्वरी ने बेसब्री से पूछा। "क्या हुआ है? विद्यावती कहां है?"

"वह... वह... राजकुमारी.. महाराज..।" कमला से बोला नहीं जा रहा था। उसने किसी तरह अपनी बात पूरी करते हुए कहा, "वह ग़ायब है।"

"ग़ायब?" राजा को विश्वास नहीं हो रहा था। "कहां? कहां ग़ायब हो गयी है वह?"

"महाराज," कमला ने पूरी बात बताने की क़ोशिश की, "ऐसा मेरे साथ कभी हुआ नहीं। मुझे लगा कि मैं सो गयी हूं। जैसे कि मुझे ग़श आ गया था। उठी तो मेरा सर बहुत भारी था। लेकिन मैंने किसी तरह उसके कमरे में झांकने की कोशिश की। वह अपने बिस्तर में नहीं थी। ऐसे लगा जैसे कि वह बहुत जल्दी में उठ गयी हो। मैंने हर जगह उसे ढूंढ़ा, लेकिन वह कहीं नहीं मिली। वह किसी कमरे में नहीं है, न ही वह वाटिका में है।"

"लेकिन वह जा कहां सकती है?" रानी स्वयं भी राजकुमारी का कक्ष देख आयी थी।

"वह जा कहां सकती है?" राजा वीरसेन को भी अचंभा हो रहा था।

राजा और रानी दोनों ही अब उसे ढूंढ़ रहे थे और ज़ोर-ज़ोर से पुकार रहे थे, "विद्यावती! राजकुमारी! बेटी! कहां हो तुम?"

अब यह निश्चित हो चुका था कि राजकुमारी विद्यावती विश्राम महल में नहीं है, न ही वह उस द्वीप पर और कहीं है। (जारी)

शांति की खोज

अपनी धुन का पक्का राजा विक्रम फिर उस पेड़ के पास गये, पेड़ से लाश को उतारा, उसे अपने कंधे पर लादा और हमेशा की तरह श्मशान में से गुज़रने लगा। तब लाश में मौजूद बैताल बोला, "राजन्, आधी रात के समय जो आप इस भयानक श्मशान में से निकल रहे हैं, और जिस तरह आप अपने ध्यान में खोये हुए हैं, उसे देखकर मुझे ऐसा लगने लगा है कि या तो आप बहुत बड़े पंडित हैं, या ज्ञानी हैं और या पामर। पर यह ज़रूरी नहीं कि पंडित ज्ञानी ही हो, या ज्ञानी पंडित ही हो। आप यह हकीकत जानते ही होंगे, क्योंकि जो एक को सच लगता है, ज़रूरी नहीं कि वह दूसरे को भी लगे, बल्कि संभावना यह भी है कि वह उसे झूठ लगने लगे। इस प्रकार की जब समस्या किसी के सामने आती है तब मानव ही नहीं, कभी-कभार देवी-देवता भी भूल कर बैठते हैं। बतौर सबूत मैं आपको

बैताल कथाएं

एक पंडित और पामर की कहानी सुनाऊंगा । आप उसे ध्यान से सुनें ताकि आपका वक्त भी कट जाये और आपको थकान भी महसूस न हो ।" फिर बैताल वह कहानी सुनाने लगा ।

वह कहानी इस प्रकार थी:

एक ज़माने में स्वर्णद्वीप नगर में एक धनी रहता था । धनी का नाम तारकेश्वर था । उसकी धन-दौलत और उसकी संपदा उसके लिए बहुत बड़ी परेशानी बन गये थे । उसका व्यापार दिन प्रति-दिन बढ़ता जा रहा था, लेकिन उसके सभी सहयोगी उससे द्वेष करने लगे थे । उसके चारों तरफ बस डाह ही ड़ाह थी ।

उसके भाई-बंधु भी अक्सर उसके पास आकर उससे धन की सहायता ही मांगते और उसे परेशान करते । उधर उसकी पत्नी ज़ेवर बनवाये जा रही थी । उसे इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं थी कि उसका पति इस बारे में क्या सोचता है । बेटा भी धन पानी की तरह बहाता था । चारों तरफ बस, धोखा ही धोखा था । मित्रता नाम-मात्र को ही थी । सब मित्र चाटुकारिता पर उतर आये थे ।

उसने बहुत कोशिश की कि बेटा सही रास्ते पर आ जाये, पर उसकी वह सारी कोशिश नाकाम रही ।

इन्हीं सब कारणों से तारकेश्वर के मन में घोर अशांति घर कर गयी । ऐसी हालत में उसकी भेंट सुप्रसिद्ध योगी शिवानंद से हुई ।

तारकेश्वर ने उसे अपने मन की हालत बतायी और उससे अनुरोध किया कि मन की शांति के लिए वह कोई उसे उपाय बताये ।

तारकेश्वर की बात सुनकर योगी ने कहा, "वत्स, यहाँ से सौ कोस दूर विंध्य पर्वत के पास देवनंदना नाम का एक सरोवर है । उस सरोवर के किनारे देवनंदिनी नाम की देवी का मंदिर है । उस देवी के दर्शन कर लेने से तुम्हारे मन को अवश्य शांति मिलेगी । लेकिन उस मंदिर में स्थित देवी की मूर्ति की एक विशेषता है । तुम एक बात का ख्याल रखना । केवल ज्ञानी ही उस देवी के दर्शन करने का सौभाग्य

पा सकता है ।"

तारकेश्वर ने योगी को साष्टांग प्रणाम किया और उसके प्रति अपनी कृतज्ञता जतायी ।

फिर एक शुभ मुहूर्त में वह देवनंदिनी के दर्शन के लिए निकल पड़ा । यात्रा बड़ी लंबी थी । वह अकेले ही कई दिनों तक चलता रहा ।

फिर एक दिन उसे रास्ते में तीर्थंकर नाम का एक यात्री मिला । बातचीत के दौरान तारकेश्वर ने यह जान लिया कि तीर्थंकर एक महापंडित है । उसे यह भी पता चला कि तीर्थंकर भी विंध्य पर्वत की ओर जा रहा है ।

इस से उसे बहुत ही खुशी हुई । उसका यह विश्वास था कि ऐसे पंडितों के संसर्ग से ज्ञान की वृद्धि होती है । उसने अपने मन के भौतिक-आध्यात्मिक संदेहों के बारे में तीर्थंकर से बात की, और तीर्थंकर ने तारकेश्वर के उन संदेहों का उचित ढंग से निराकरण किया ।

यह यात्रा ऐसे ही चलती रही । फिर एक दिन तीर्थंकर ने तारकेश्वर से सीधे-सीधे ही पूछ लिया, "तुमने यह तो बताया कि तुम विंध्य पर्वत की ओर जा रहे हो, लेकिन तुमने यह नहीं बताया कि वहाँ तुम किस मकसद से किस जगह जा रहे हो! यानी कि तुम्हारी मंजिल क्या है?"

तारकेश्वर ने अपने मन की बात अब बिलकुल छिपाये न रखी, बल्कि उसने अपनी

संपत्ति संबंधी सभी समस्याएं और उनसे पैदा होने वाली मानसिक अशांति के बारे में साफ़ तीर्थंकर को कह सुनाया ।

फिर तारकेश्वर बोला, "मुझे मन की शांति चाहिए । इसलिए मैं देवी देवनंदिनी के दर्शन करना चाहता हूं ।"

"अरे, मैं भी तो वहीं जा रहा हूं । मैं भी उसी देवी के दर्शन करना चाहता हूं," तीर्थंकर ने कहा ।

तीर्थंकर की बात सुनकर तारकेश्वर को बड़ा अचंभा हुआ और वह बोला, "आप तो महान पंडित हैं । मुझे इस बात का आश्चर्य होता है, क्या आपकी भी कोई समस्या है?"

इस पर तीर्थंकर के चेहरे पर चिंता और

उदासी के चिह्न उभर आये । उसने कहा, "मेरे पिता एक बहुत बड़े पंडित हैं । मैंने भी अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया है । इससे मैं रोज़ी-रोटी तो कमा ही लेता हूं, लेकिन मेरी इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पा रही । मैं चाहता था कि मेरे पास भी रहने के लिए एक शानदार महल हो, बीवी और बेटी के लिए कीमती आभूषण और वस्त्र हों, लेकिन यह सब कुछ मुझे प्राप्त न हो सका । इसलिए मेरे मन में अशांति घर कर गयी है । मैंने सुना था कि देवी देवनंदिनी के दर्शन से मुझे सब कुछ प्राप्त हो जायेगा । इसीलिए मैं वहां जा रहा हूं ।"

तीर्थंकर की बात सुनकर तारकेश्वर के चेहरे पर उत्साह की लहर दौड़ गयी । उसने तीर्थंकर से कहा, "मित्र, अब मुझे देवी के दर्शन करने की ज़रूरत नहीं । मैं यहीं से लौटना चाहता हूं ।"

किंतु तीर्थंकर ने तारकेश्वर को रोकते हुए कहा, "अरे, यह क्या । इतनी दूर तक आये हो और देवी के दर्शन किये बिना ही लौट जाना चाहते हो । यह उचित नहीं । ऐसा तुम क्यों करना चहते हो, यह मैं जानना नहीं चाहता, लेकिन इतना मैं ज़रूर कहना चाहता हूं कि तुम मेरी खातिर ही सही, देवनंदिनी के दर्शन करने मेरे साथ चलो । देवी के दर्शन करने के बाद हम दोनों साथ-साथ नगर को लौटेंगे ।"

तारकेश्वर उसका अनुरोध ठुकरा नहीं सका । कुछ दिनों के बाद वे दोनों देवनंदना सरोवर के निकट पहुंचे । देवी देवनंदिनी का मंदिर वहीं था । वह मंदिर जीर्ण अवस्था में पड़ा था । वहां एक शिलालेख पर लिखा था कि केवल ज्ञानियों को ही देवी के दर्शन होते हैं, दूसरों को नहीं ।

उस शिलालेख को पढ़कर तीर्थंकर ने सरोवर में स्नान किया और फिर मंदिर के भीतर गया । उसे मंदिर में देवी की मूर्ति कहीं दिखाई नहीं दी । उसे लगा- हो सकता है रख-रखाव के अभाव में मूर्ति मिट्टी में मिल गयी हो या कोई उसे चुरा ले गया हो । उसने चारों ओर उस देवी की मूर्ति के लिए अपनी निगाह दौड़ायी ।

इतने में जंगल के फूलों की एक माला पिरोये तारकेश्वर भी वहां चला आया । उसे

देखकर तीर्थंकर हंसने लगा और बोला, "तुमने वाकई बहुत कष्ट उठाया। पहले तुमने जंगल से फूल चुने और फिर उनकी माला भी गूंथी है-लेकिन यहां तो देवी है ही नहीं।"

तीर्थंकर की बात सुनकर तारकेश्वर को हैरानी नहीं हुई। उसने कहा, "तुम जैसे ज्ञान-शून्य व्यक्तियों को यहां देवी के दर्शन कैसे होते!" और उसने बड़ी श्रद्धा से अपनी आंखें मूंदकर देवी का ध्यान करना शुरू कर दिया।

तारकेवर को इस तरह आंखें मूंदे ध्यान में लीन देखकर तीर्थंकर ने उसका उपहास किया और अवहेलना के स्वर में बोला, "तारकेश्वर, अपने को ज्ञानी कहलाने के मोह में तुम यह ढोंग क्यों रच रहे हो? जो मूर्ति मुझे दिखाई नहीं दे रही, वह भला तुम्हें कैसे दिखाई देगी?"

तारकेश्वर ने तीर्थंकर के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। उसने केवल अपने हाथ की फूल माला देवी के गले में पहना दी। तीर्थंकर को देवी की प्रतिमा दिखाई नहीं दे रही थी, लेकिन फूल माला शून्य में अटकी ज़रूर दिखाई दे रही थी। अगर वहां देवी की प्रतिमा न होती तो वह फूल माला इस स्थिति में कैसे होती? यह सब सोचते हुए तीर्थंकर ने जान लिया कि तारकेश्वर को देवी के दर्शन अवश्य हुए हैं, और यह सौभाग्य वह नहीं पा सका है।

फिर तीर्थंकर और तारकेश्वर नगर की

ओर लौट पड़े। नगर में पहुंच कर तारकेश्वर तीर्थंकर को अपने यहां ले गया और उससे बोला, "मैं तुम्हारी विद्वत्ता पर गद्‌गद् हूं, इसीलिए मैं तुम्हें यह कुछ देना चाहता हूं। तुम इसे ठुकराना नहीं।" और फिर उसने उसे अमूल्य हीरे-जवाहरात, सोने के आभूषण और एक लाख स्वर्ण मुद्राएं पुरस्कार-स्वरूप दे दीं।

बैताल अपनी कहानी सुना चुका था। कहानी सुना चुकने के बाद बोला, "राजन्, मन की शांति के लिए तारकेश्वर देवी के दर्शन करने निकला था, लेकिन बीच रास्ते में ही उसका मन बदल गया। वह क्यों वहां से लौटना चाहता था? यात्रा के दौरान तीर्थंकर जैसे महापंडित ने तारकेश्वर के

अनेक संदेहों का निराकरण किया । तब ऐसे महापंडित को तारकेश्वर ने ज्ञानशून्य कैसे कहा? क्या यह असंगत नहीं लगता? फिर देवी ने तीर्थंकर जैसे पंडित एवं ज्ञानी को दर्शन न देकर तारकेश्वर जैसे पामर को दर्शन दिये । क्या इससे ऐसा नहीं लगता कि देवी से कोई बहुत बड़ी भूल हुई हो? संदेहों का समाधान जानते हुए भी यदि आप उनके बारे में नहीं बतायेंगे तो आपका सर फट जायेगा ।"

इस पर राजा विक्रम बोले, "तारकेश्वर को पहले यह गलतफहमी हुई थी कि उसके मन की अशांति का कारण उसकी संपदा-संपत्ति है । लेकिन जब उसे पता चला कि तीर्थंकर उसी संपत्ति और संपदा के लिए देवी के दर्शन के लिए निकला है, तो उसकी गलतफहमी दूर हो गयी, और उसी क्षण उसने वहां से लौटने की ठान ली । उसने यह भी निर्णय ले लिया था कि वह अपनी संपदा को सुयोग्य व्यक्तियों में बांट देगा और अपने मन की शांति को बरकरार रखेगा । उधर धन-संपदा के झंझट में पड़ने की सोचने वाले महापंडित तीर्थंकर को उसने ज्ञानशून्य कहा । इस सूक्ष्मता को जब तारकेश्वर जैसे एक सामान्य व्यक्ति ने पहचान लिया, तब उसे देवी कैसे न पहचान पाती । इसीलिए तारकेश्वर को देवी के दर्शन हुए और तीर्थंकर उनसे वंचित रह गया । इसमें आश्चर्य होने की बात कहीं नज़र नहीं आती । ध्यान देने योग्य एक बात और भी है-तारकेश्वर महान पंडित न भी हो, वह ज्ञानी और उदारमना ज़रूर था । इसीलिए तो उसने नगर लौटकर तीर्थंकर के मन की शांति बहाल करने के लिए उसे धन-दौलत और आभूषणों से परिपूर्ण कर दिया ।"

इस प्रकार राजा विक्रम से बैताल को जैसे ही उत्तर मिला, वैसे ही लाश के साथ वह अदृश्य हो गया, क्योंकि राजा का मौन भंग हो चुका था । अब वह उसी पेड़ की उसी शाखा से फिर लटकने लगा था । (कल्पित)

(आधार : एन.आर. नागेश की रचना)

अनूठी प्रतियोगिता

विशालपुर के राजा गरुड़सेन के मन में एक बार विचार आया कि जो व्यक्ति ऐसा झूठ बोलेगा जो बिलकुल विश्वसनीय लगे, उसका सम्मान होना चाहिए। बस, उसने फौरन अपने दरबारी विदूषक को बुलाया और उसे अपने मन की बात बता दी।

विदूषक एक पल सोचता रहा। फिर बोला, "राजन्। क्यों न हम अगले महीने झूठों की एक प्रतियोगिता का आयोजन करें, और उसमें देश के चारों कोनों से झूठ बोलने में माहिर व्यक्तियों को आमंत्रित करें?"

राजा ने इसके लिए फौरन स्वीकृति दे दी और कहा, "तुम्हारा विचार उत्तम है। फौरन इसकी तैयारी करनी शुरू कर दो।"

विदूषक ने बिना किसी और विचार को मन में लाये कहा, "प्रभु, हमारे राजभवन का सभामंडप इस आयोजन के लिए शायद काफी नहीं होगा। इसलिए राजोद्यान की पूर्वी दिशा में जो क्रीड़ास्थल है, वहीं यह प्रतियोगिता करनी चाहिए। वहां प्रतियोगियों के ठहरने की व्यवस्था भी हो सकेगी। और हां, इस समूचे काम पर दो हजार अशरफियां खर्च आ सकती हैं।"

राजा गरुड़सेन ने अपने कोषाध्यक्ष को आदेश दिया और कोषाध्यक्ष ने विदूषक को दो हजार अशरफियां दे दीं।

विदूषक फिर बोला, "राजन्, कल ही मैं इस प्रतियोगिता के लिए देश भर में ढिंढोरा पिटवाने की व्यवस्था करता हूं ताकि दूर-दूर से लोग आ सकें। इसके साथ ही मैं अन्य प्रकार के प्रबंध करने में भी जुट जाऊंगा।"

आखिर, झूठों की प्रतियोगिता का दिन निकट आ ही गया। विदूषक ने राजा से प्रार्थना की कि वह सुबह आठ बजे क्रीड़ास्थल पर पहुंचे और उस प्रतियोगिता का अपने कर-कमलों से शुभारंभ करें।

प्रमिला अग्रवाल

राजा ने वैसा ही किया, और प्रतियोगिता वाले दिन वह ठीक आठ बजे प्रतियोगिता-स्थल पर पहुंच गया । लेकिन राजा को वहां प्रतियोगिता के प्रति किसी प्रकार का उत्साह दिखाई न पड़ा ।

राजा से तुरंत वहां की देखभाल करने वाले व्यक्ति को बुलवाया और उससे पूछा, "आज तो यहां एक बहुत बड़ा आयोजन होने वाला था! झूठों के बीच एक प्रतिस्पर्धा होनेवाली थी । लेकिन यहां तो किसी प्रकार की कोई व्यवस्था नहीं है । क्या बात है?"

राजा की बात सुनते ही वह व्यक्ति घबरा गया और कंपन-भरे स्वर में बोला, "क्षमा कीजिए प्रभु, मैं आपकी बात समझा नहीं । आप किस प्रतिस्पर्धा की बात कर रहे हैं? हमें तो उसके बारे में कोई जानकारी नहीं ।"

इतने में विदूषक भी वहां आ पहुंचा । राजा गरुड़सेन गुस्से से तमतमा रहा था । बोला, "झूठों के बीच प्रतिस्पर्धा करवाने के बारे में क्या तुमने कोई व्यवस्था की थी? लगता है इसके लिए तुमने कुछ नहीं किया ।"

विदूषक ने नम्रता से अपने हाथ बांधते हुए कहा, "क्षमा करें, महाराज । मैं कुछ समझ नहीं पा रहा । आप क्या कहना चाहते हैं? आप किस प्रतियोगिता-आयोजन का ज़िक्र कर रहे हैं? मैं तो उसके बारे में कुछ नहीं जानता । यह कैसे संभव हो सकता है कि आपने कोई आदेश दिया हो और मैं उसका पालन न करूं । ऐसा साहस मैं तो नहीं जुटा सकता । असल में बात क्या है, कृपया विस्तार से बताइए ।"

विदूषक के इस प्रकार बात करने से राजा गरुड़सेन समूची बात समझ गया । वह ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा । फिर बोला, "वाह! खूब! तो इसका मतलब यह हुआ कि झूठों के बीच होनेवाली प्रतिस्पर्धा खत्म हो चुकी है, और उसमें विजयी तुम ही रहे हो । मान गये, भई, मान गये । इस प्रतिस्पर्धा में तुम्हें कोई पछाड़ नहीं सकता । तुमने जो दो हजार अशरफियां मुझ से ली थीं, उन्हें लौटाने की अब आवश्यकता नहीं । इनके अलावा दो हजार अशरफियां और तुम्हें पुरस्कार स्वरूप मिलेंगी ।"

चन्दामामा परिशिष्ट-४३

भारत के पशु-पक्षी

कोयल

हमारे कई कवियों, पार्श्व-गायकों और स्वर-साधकों को कोयल की उपाधि दी जाती है । कोयल हमारे संगीत-प्रिय पक्षियों में सबसे सुरीली मानी जाती है । वसंत ऋतु में यह पक्षी खूब जी भरकर गाता है, लेकिन देश में जब ठंड का साम्राज्य होता है तो यह मौन साध लेता है । इन्हीं दिनों यह गरम इलाकों की ओर कूच करने की सोचता है । भारतीय साहित्य में कोयल की संगीतमयता का भरपूर बखान मिलता है ।

नर कोयल काले स्याह रंग का होता है । । लेकिन उसकी चोंच पीले-हरे रंग की होती है, और आंखों के इर्द-गिर्द लाली रहती है । मादा कोयल हलके भूरे रंग की होती है, और उस पर अनेक सफेद धारियां और धब्बे रहते हैं ।

कहा जाता है कि यह पक्षी अपना घोंसला बनाने से जी चुराता है । इस बात को लेकर यह काफ़ी बदनाम है । मादा कोयल कौओं के घोंसले में अपने अंडे दे देती है और उम्मीद यह करती है कि कौए ही उसके अंडे सेयेंगे और वे ही उसके नन्हों की देखभाल भी करेंगे । कौए इसका इतना काम तो कर ही देते हैं । हाँ इसके अंडों का रंग वही होता है जो कौए के अंडे का-पीला-स्लेटी, भूरे धब्बों वाला ।

यह पक्षी उसी पेड़ पर रहना चाहता है जो खूब बड़ा हो और पत्तों से भरा हो । इसका खुराक है-फल और कीड़े ।

एक उभरता कवि

भारत में यह बहुत कम ही देखने को मिलता है कि पुस्तक-प्रेमी किसी पुस्तक पर उसके लेखक के हस्ताक्षर लेने के लिए उतावले हों और पंक्ति में आयें। बहरहाल, दूसरे देशों में यह प्रथा असाधारण नहीं है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि हमारे यहां रचनाकार और लेखक रातों-रात अभूतपूर्व ख्याति नहीं पा जाते। लेकिन कुछ उदाहरण कभी-कभी मिल भी जाते हैं, जैसे दिल्ली में रहने वाले ग्यारह-वर्षीय आदित्य दामोदरन का उदाहरण।

फरवरी के शुरू में दिल्ली में विश्व पुस्तक मेले का आयोजन हुआ। उसी मेले में एक जाने-माने प्रकाशक के स्टाल में आदित्य आराम से बैठा अपने हाल ही में प्रकाशित कविता संग्रह की प्रतियों पर हस्ताक्षर किये जा रहा था। पुस्तक-प्रेमियों ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपे उसके संग्रह (वाइब्रेशंस) की समीक्षाएं पढ़ी थीं जो बहुत ज़ोरदार थीं। जब उन्हें पता चला कि यह उभरता कवि अपनी पुस्तक की प्रतियों पर हस्ताक्षर करेगा, तो लंबी-लंबी कतारों का लग जाना मामूली बात थी। इन पुस्तक-प्रेमियों में काफी मात्रा उन बच्चों की थी जो स्वयं कविताएं लिखने में रुचि रखते हैं।

आदित्य ने अपनी पहली कविता तब लिखी जब वह आठ वर्ष का था। तब तक वह खूब पढ़ता रहा था। जो कवि उसके भीतर उतर गये थे, वे थे वर्ड्सवर्थ और बायरन। उसके पिता उस समय उत्तर-पूर्व राज्यों में नौकरी कर रहे थे। वहां पर सूरज जल्दी छिपता है। आदित्य उस समय चार वर्ष का था। वह अक्सर अपने पिता के अध्ययन-कक्ष में चला जाता और वहां से कोई भी किताब उठा लेता। वह कहता है कि वह ढेर-सारी कविताएं पढ़ता था, हालांकि उनका अर्थ बहुत कम ही उसके पल्ले पड़ता था।

जब आदित्य साढ़े पांच वर्ष का हो गया तो वह अपने माता-पिता से कविताओं का अर्थ जानने की इच्छा भी करने लगा। अब उन कविताओं का भाव उसकी समझ में आने लगा था, विशेषकर उन कविताओं का जो प्रकृति को अपने में लिये होती थीं और कल्पनाशीलता से भरपूर होती थीं। उसे उन कविताओं की पंक्तियों में रहने वाली भावना भी खूब छूती थी।

पूर्व की दृश्यावली के सौंदर्य को छोड़कर जब वह कलकत्ता और दिल्ली जैसे महानगरों में आया तो उसे पहली बार गरीबी और प्रदूषण के रूबरू होना पड़ा। इसी से उसके भीतर कई प्रकार के भाव जगे। उसने निर्णय लिया कि वह उन्हें शब्दों में पिरोयेगा। पाठशाला में जानेवाले हर बालक की तरह आदित्य भी पाठशाला से लौटकर पहले पाठशाला में घर के लिए दिया गया काम खत्म करता है और फिर खेलने के लिए घर से बाहर चला जाता है। वह आम तौर पर फुटबाल ही खेलता है, लेकिन उसका प्रिय खेल शतरंज है। शाम को वह किताबें पढ़ता है और फिर अपनी कविताएं रचने बैठ जाता है। अब उसे केवल यही इंतज़ार है कि कब उसकी वार्षिक परीक्षा खत्म हो और कब वह अपने दूसरे संग्रह के लिए कविताओं का चयन करे। प्रकाशक ने उससे वायदा किया है कि वह उसके अगले जन्म दिवस तक यह संग्रह प्रकाशित कर देगा।

आदित्य समझता है कि वह काव्य-रचना को अपना पेशा नहीं बना सकता। बड़ा होकर वह कंप्यूटर इंजीनियर बनना चाहता है। उसे अभी दस-पंद्रह वर्ष और इंतज़ार करना होगा। तब तक हमें उम्मीद है इस उदीयमान कवि से हमें अनेक कविताएं मिलती रहेंगी।

क्या तुम जानते हो?

१. सोने और कीमती पत्थरों के वजन का माप क्या है?
२. आकाश में सबसे चमकीला तारा कौन-सा है?
३. संसार में पहली पतली जिल्द वाली (पेपर बेक) पुस्तक किसने प्रकाशित की?
४. इस वर्ष के ऑस्कर पुरस्कारों की घोषणा हो चुकी है। भारत के सत्यजित रे को विशिष्ट पुरस्कार मिला। इन पुरस्कारों का नाम "ऑस्कर पुरस्कार" कैसे पड़ा?
५. यदि पच्चीसवीं वर्षगांठ रजत जयंती है तो "पेपर वर्षगांठ" क्या है?
६. शक संवत् का पहला महीना कौन सा है?
७. १९२१ से पहले टेबल टेनिस किसी और नाम से जानी जाती थी। वह नाम क्या था?
८. कहा जाता है कि फारस का एक पैगंबर अपने जन्म के पहले दिन ही हंसा था। वह पैगंबर कौन था?
९. "ए" "बी" तथा "ओ" रक्त-समूह हैं। एक समूह और है। वह क्या है?
१०. एक व्यक्ति एक ही समय तीन देशों का राष्ट्रपति था। वह कौन था? कब?
११. ज़ेब्रा की विशिष्टता क्या है?
१२. शनि के चंद्रमा कितने हैं?
१३. अंतरिक्ष में अंतरिक्ष-यात्री को आकाश का रंग कैसा दिखता है?
१४. आगरा की नींव किसने रखी? किस वर्ष में?
१५. क्या केंचुए की आंखें और कान भी होती हैं?

उत्तर

१. कैरेट
२. वृहद् श्वान नक्षत्र-मंडल का व्याध या लुब्धक तारा।
३. १८६७ में एंटन फिलिप रिक्लाम ने।
४. १९२९ में, जब पहली बार पुरस्कारों की घोषणा की गयी। तब मूर्ति आदमी की शक्ल की थी। अमेरिकन अकेडमी ऑव मोशन पिक्चर्स के एक कर्मचारी ने कहा कि यह तो उसके चाचा ऑस्कर से मिलती-जुलती है। तभी से उस मूर्ति को यह नाम दे दिया गया। यह मूर्ति फिल्म की एक रील पर खड़ी दिखायी जाती है।
५. पहली।
६. चैत्र
७. पिंग पौंग। इसका आविष्कार एक ब्रिटिश कंपनी ने किया था।
८. ज़रथुस्त्र।
९. एबी
१०. सीमोन बोलीवियर, १९२८ में वह बोलिविया, पेरू और कोलंबिया का राष्ट्रपति था।
११. दो ज़ेब्राओं की धारियां एक जैसी नहीं होतीं।
१२. दस
१३. काला।
१४. सिकंदर लोधी, १५०६ में।
१५. केंचुए की न आंखें होती हैं और न कान।

चंदामामा की ख़बरें

सबसे ऊंचा

अगर तुमसे कोई पूछे कि संसार का वाहन ले जाने ययोग्य सबसे ऊंचा पुल कहां है, तो तुम बड़े गर्व से कह सकते हो: खर दुंगला (समुद्र तल से १८५०३ फुट से भी अधिक) के निकट, जम्मू-कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र में । इसे बीकंस की हिमांक परियोजना के अंतर्गत तैयार किया गया था । बीकंस भारत का सीमा सड़क संगठन है । इस परियोजना की देखरेख वोंबाट केरा ने की । वह मुख्य इंजीनियर हैं । गिन्नेस बुक ऑव रिकार्डस में उनका नाम दर्ज कर लिया गया है ।

एक पेड़ पर पांच लाख डालर खर्च

एक पेड़ है अहूएहेयते । इसका उच्चारण सरल नहीं है, पर हर वर्ष यह हजारों की संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है । सरो के पेड़ की तरह का यह पेड़ बहुत बड़ा है । विश्वास किया जाता है कि यह दो हजार वर्षों से भी अधिक पुराना है । पर्यटकों के आकर्षण का यह बिंदु मैक्सिको के ओआक्साका राज्य में है । वहां की सरकार ने फैसला किया है कि इसे सुरक्षित रखने के लिए पांच लाख डालर खर्च किये जायेंगे ।

पीले से बेहतर दिखेगा ।

धुंधलायी दृष्टि वाले बच्चों के लिए आशा की एक किरण फूटी है । अगर वे पीली झलक वाले चश्मे पहनें तो उन्हें बेहतर दिखने लगेगा । ऑक्सफोर्ड विश्व-विद्यालय के तंत्रिका शरीर-विज्ञान विभाग के जॉन स्टीन ने सामान्य शीशे का चश्मा पहनने वाले बीस ऐसे बच्चों पर प्रयोग किये और उन्होंने यह पाया कि उन बालकों ने जब पीली झलक वाले शीशे के चश्मों को पहना तो उन्हें बेहतर दिखाई दिया ।

ज्योतिष-शास्त्र

रामशास्त्री ने अपने पिता से ही सभी शास्त्रों का अध्ययन किया था। काव्य में उसकी काफी रुचि थी, किंतु ज्योतिष के प्रति उसके मन में विशेष अनुरक्ति थी। उसने निश्चय किया कि वह बड़ा होकर ज्योतिषी ही बनेगा।

बेटे के मन की बात जानकर पिता ने उसे चेताते हुए कहा, "पुत्र, ज्योतिष-शास्त्र केवल विश्वास पर आधारित है। ज्योतिष को जीविका-उपार्जन का साधन नहीं बनाना चाहिए। तुम हर शास्त्र में पारंगत हो। तुम काव्य-रचना से यश कमाओ और सुख-शांति से जीवन व्यतीत करो। और हां, अपना शौक पूरा करने के लिए जब-तब ज्योतिष का सहारा भी ले सकते हो।"

रामशास्त्री को अपने पिता की बात पसंद नहीं आयी। वह अपने निश्चय पर अटल रहा। और यह भी इत्तफाक ही था कि जिस-जिस के बारे में उसने भविष्यवाणी की थी, वह सच निकली।

उसी गांव में चार व्यक्तियों को उसने बताया कि उनके घरों के पिछवाड़े में सोने के सिक्कों के कलश हैं। वहां के लोगों को रामशास्त्री के ज्योतिष पर बहुत विश्वास था। उन्होंने अपने-अपने घर के पिछवाड़े में खुदाई करानी शुरू कर दी और वाकई उन्हें वहां खुदाई से सोने के कलश मिले। इससे रामशास्त्री को बहुत ख्याति मिली और सभी जगह से लोग उसके पास ज्योतिष लगवाने आने लगे।

एक दिन उसके यहां पड़ोस के गांव से सुभाष और अविनाश नाम के दो व्यक्ति आये। सुभाष एक बहुत बड़ा ज़मींदार था और अविनाश एक कुख्यात हत्यारा था।

उन्हें देखकर रामशास्त्री के पिता ने उसे भीतर बुलाकर कहा, "बेटा, इन दोनों को

शालिनी द्विवेदी

मैं अच्छी तरह जानता हूं। ये बड़े निर्दयी और दुष्ट हैं। इन्हें कुछ अच्छी-अच्छी बातें बताकर चलता करो। इनके बारे में ज्योतिष लगाने बैठ गये तो तुम्हारी अपनी जान पर आ बन सकती है।"

रामशास्त्री को फिर अपने पिता की सलाह पसंद नहीं आयी। उसे अपने ज्योतिष पर बहुत विश्वास था। उन दोनों की जन्म-कुंडलियां देखकर उसने कहा, "तुम्हारे घरों के पिछवाड़े में कुछ बांबियां हैं जिनमें नाग रहते हैं। उन्हें खुदवा डालो और नागों को वहां से हटवा दो। यह तुम्हारे लिए शुभ होगा।"

इस घटना के एक हफ्ते बाद रामशास्त्री का पिता शहर से लौटा। उसने कहा कि वहां उसे सुभाष और अविनाश दिख गये थे। एक ने अपने घर के पिछवाड़े में जब बांबी खुदवायी तो उसमें से दस लाख अशरफियों से भरे घड़े मिले। वह रामशास्त्री को दस हजार अशरफियां देकर उसका सम्मान करना चाहता था। दूसरे के घर के पिछवाड़े में बांबियां खोदने पर चार नाग निकले। उन नागों ने घर के मालिक को तो छोड़ दिया, लेकिन घर के बाकी सदस्यों की जान ले ली। अब वह व्यक्ति रामशास्त्री की जान लेने पर उतारू था।

अपने बेटे को यह सब बताकर उसने कहा, "मैं जिस खतरे के बारे में तुम्हें सचेत करना चाहता था, वह हो ही गया। अब मुझे यहां रहने में ज़रा भी खैरियत नहीं दिखती। अच्छा हो हम कुछ दिन बहर बिता आयें।"

रामशास्त्री अब अपने पिता की बात टाल

नहीं सका, लेकिन वह यह ज़रूर चाहता था कि बाहर जाने से पहले वह उस व्यक्ति से दस हजार अशरफियां ले ले जिसे दस लाख अशरफियां मिली थीं। उसके पिता ने उसे इसके लिए स्वीकृति दे दी।

"जिसके बारे में मेरा ज्योतिष सही निकला, वह कौन था, सुभाष या अविनाश?" रामशास्त्री ने अपने पिता से जानना चाहा।

रामशास्त्री का पिता कुछ देर तक सोचता रहा। फिर बोला, "यह तो मैं नहीं कह सकता कि भला किस का हुआ। इसकी मैं पड़ताल नहीं कर पाया।"

रामशास्त्री उतावला हो रहा था। बोला, "लेकिन पिताजी, यह तो मेरे लिए जिंदगी और मौत का सवाल है। आप ठीक से याद करके बताइए।"

रामशास्त्री का पिता फिर सोचने लगा। आखिर बोला, "बेटा, मेरी उम्र बढ़ती जा रही है। याददाश्त कम होती जा रही है। बहुत कोशिश करने पर भी याद नहीं आ रहा कि कौन तुम्हें पुरस्कार देना चाहता था, और कौन तुम्हारी जान लेने पर उतारू था। तुम स्वयं अपने ज्योतिष के बल पर यह निष्कर्ष निकालो कि तुम्हें सुभाष के यहां जाना चाहिए या कि अविनाश के यहां। तुम्हारा ज्योतिष चूकता नहीं। तुम ठीक जगह ही जाओगे। ठीक से गणना करो, वरना तुम्हारे सर पर गाज गिर सकती है।"

रामशास्त्री देर तक गणना करता रहा। लेकिन वह इसके बारे में किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाया। आखिर उसने अपने पिता

से कहा, "मैं बड़ी विकट स्थिति में पड़ गया हूं । मैं यह गांव छोड़ना भी नहीं चाहता । ठीक है, मैं यह ज्योतिष शास्त्र ही छोड़ देता हूं । लेकिन मैं यह गांव नहीं छोड़ूंगा । मुझे वह पुरस्कार भी नहीं चाहिए । मैं, बस इसी गांव में रहना चाहता हूं ।"

बेटे की बात सुनकर पिता हंस दिया और बोला, "ज्योतिष छोड़ना ही ठीक होगा, क्योंकि लोगों के बारे में भविष्यवाणियां करते समय तुमने कितनी गलतियां कीं, यह तुम स्वयं नहीं जानते । तुम्हें तो, बस, उसी पर गर्व हो रहा होगा जो ठीक निकला । जब मैंने तुम से यह कहा कि सुभाष या अविनाश, इनमें से एक के बारे में तुम्हारी भविष्यवाणी गलत सिद्ध हुई है तो तुमने आश्चर्य व्यक्त नहीं किया । इसका मतलब तो यह हुआ कि गलत बात से तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं । जब मैंने तुम्हें यह बताया कि तुम्हारी जान खतरे में है, तब तुमने ज्योतिष पर विश्वास नहीं किया और पुरस्कार लेने के लिए उनमें से किसी एक व्यक्ति के पास जाने का साहस नहीं जुटा पाया । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ज्योतिष पर तुम्हारा स्वयं का कितना विश्वास है । मुझे शहर से लौटते हुए उनमें से कोई भी दिखाई नहीं दिया था । मैंने तो झूठ कहा था । खैर, अब भी समझ जाओ । ज्योतिष लगाना बंद करो और काव्य-पांडित्य के बल पर जीने की कोशिश करो । तुम्हारी आखें खोलने के लिए ही मैंने सुभाष और अविनाश के बारे में यह कहानी गढ़ी थी ।

अब रामशास्त्री को पता चला कि ज्योतिष को पेशा बनाने में क्या-क्या खतरे हो सकते हैं, और क्यों उसके पिता ने उसे ज्योतिष को पेशा न अपनाने के लिए चेताया था ।

'रामशास्त्री ने अब ज्योतिष का पेशा छोड़ दिया था । वह अपना पूरा समय काव्य-रचना पर ही लगाने लगा और उसने खूब नाम भी कमाया । ज्योतिष शास्त्र तो वह जानता ही था, इसलिए लोग उसे और भी सम्मान देने लगे । अब उसने हर तरह से ख्याति पा ली थी ।

श्रेष्ठ पंडित

पुराने ज़माने में उज्जयिनी में शांतिभूषण नाम का एक महान पंडित रहता था। उसके बारे में लोगों की राय बहुत ही ऊंची थी। वे शांतिभूषण के दो शिष्य थे-शांडिल्य और च्यवन। शांडिल्य और च्यवन के मन में हमेशा एक संदेह रहता-कैसे उनके गुरु ने इतना पांडित्य प्राप्त किया?

शांडिल्य और च्यवन ने लोगों को यह कहते हुए कई बार सुना कि ऐसा कोई शास्त्र नहीं जिसे शांतिभूषण ने पढ़ा न हो, और ऐसा कोई तथ्य नहीं जिसका उसे ज्ञान न हो। जब भी समय मिलता, शांडिल्य और च्यवन इसी बात की चर्चा किया करते।

एक दिन शांडिल्य ने च्यवन से कहा, "हमारे गुरु जी ब्रह्मभट्टारक के शिष्य हैं, और मैंने सुना है कि ब्रह्मभट्टारक का शिष्य होना बहुत ही कठिन है। क्या यह बात तुम्हारे सुनने में नहीं आयी कि तप करके भगवान को तो पाया जा सकता है, लेकिन ब्रह्मभट्टारक को नहीं पाया जा सकता?"

"आयी तो है, लेकिन मेरे विचार से गुरु चाहे कितना भी महान् हो, वह नींव के पत्थर के समान होता है। उसे ज़ीने की पहली सीढ़ी भी कह सकते हैं। अब यह एक आम धारणा है कि हमारे गुरु जी ने एक लाख ताड़-पत्रों के ग्रंथों का अध्ययन करके उन्हें जीर्ण कर लिया है। इसलिए मेरी राय में जिस ग्रंथ का गुरु जी ने बहुत पहले पठन शुरू किया था, और जिसे वह जारी रखे रहे, वही उनके अनन्य पांडित्य का कारण होगा," च्यवन ने कहा।

विचार-विमर्श करते-करते अंत में दोनों शिष्य इस निर्णय पर पहुंचे कि वे अपने संदेहों का निराकरण स्वयं गुरु जी से ही करवायेंगे। वास्तव में गुरु शांतिभूषण उन दोनों शिष्यों

रजनी श्रीवास्तव

को बहुत बड़ा प्रेम और वात्सल्य दिया करता, पुत्रसमान अपनेपन के साथ उनके साथ पेश आता । इसलिए वे दोनों गुरु के पास गये और उन्होंने अपने संदेह उसे सुना दिये ।

गुरु शांतिभूषण ने दोनों शिष्यों की बात बड़े ध्यान से सुनी और फिर बोले, "तुम लोगों को इस प्रकार का संदेह होना मैं अपना अहोभाग्य मानता हूं । काफी समय से मैं वेदांत संबंधी कुछ शंकाओं पर अपना माथा खुजला रहा हूँ, लेकिन मुझे उन का समाधान नहीं मिल रहा । इसका उत्तर केवल मेरे गुरु ब्रह्मभट्टारक ही दे सकते हैं । वह अब वृद्ध हैं, अस्वस्थ हैं । तुम दोनों काशी नगरी जाओ और वहां उनसे मिलकर इन संदेहों का उत्तर लाओ । उसके बाद मैं तुम्हारी शंकाओं का उत्तर दूंगा ।" और यह कहकर शांतिभूषण ने अपनी कुछ शंकाएं एक ताड़पत्र पर लिखकर उन्हें सौंप दीं ।

गुरु का आदेश पाकर दोनों शिष्य काशी केलिए प्रस्थान कर गये । वहां पहुंच कर उन्होंने ब्रह्मभट्टारक से भेंट की, और उनकी ओर अपने गुरु की शंकाओं वाला ताड़पत्र बढ़ा दिया ।

ब्रह्मभट्टारक ने शांतिभूषण के प्रश्नों को देखा और मंदहास के साथ बोला, "शांतिभूषण जैसे प्रकांड पंडित को अपने शिष्य के रूप में पाकर मैं अपने को गौरवान्वित अनुभव करता हूं । ऐसे प्रश्न केवल वही पूछ सकता है, और कोई नहीं । मैं अब बूढ़ा हो चुका हूं । इसलिए इन प्रश्नों का समाधन सुलझाना मेरे बस की बात नहीं रही । फिर भी ज्ञान के विकास में यदि मैं योग दे सकूं तो यह मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि होगी । तुम दोनों यहां दो दिन बाद आओ । तब तक मैं प्रयत्न करूंगा ।" और यह कहकर उस गुरु ने अपने शिष्य के शिष्यों, शांडिल्य और च्यवन को, वहां से लौटा दिया ।

दो दिन बाद जब वे दोनों शिष्य फिर ब्रह्मभट्टारक के यहां पहुंचे तो उसने उन्हें कुछ ताड़ पत्र और दो लेखनियां दीं और शांतिभूषण के संदेहों के उत्तर लिखवाने लगा ।

उसने जो कुछ कहा था, उन दोनों शिष्यों ने बराबर लिख लिया था । जब वे वहां

से चलने को हुए तो ब्रह्मभट्टारक ने कहा, "पुत्र, तुम शांतिभूषण के शिष्य हो। इसलिए तुम्हें अधिक बताने की ज़रूरत नहीं। तुम लोगों ने स्वयं ही देख लिया होगा कि तुम्हारे गुरु के संदेह मानव-धर्म संबंधी हैं। लेकिन मेरे समाधानों से कुछ विशेष प्रश्न पैदा हो रहे हैं। ये प्रश्न रसायन शास्त्र-संबंधी हैं। इनके समाधान अवंतीपुर का कुम्हार पुरकायस्थ ही दे सकता है। तुम उसके यहां जाओ, उससे भेंट करो और इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करो। यदि तुम यह नहीं कर पाये तो तुम्हारा प्रयास अधूरा रह जायेगा, और तुम्हारे गुरु के संदेहों का निराकरण भी बीच में ही रह जायेगा।"

अब दोनों शिष्य अवंतीपुर पहुंचे और वहां उन्होंने पुरकायस्थ से भेंट की। उन्होंने उसे वहां आने का कारण भी बताया।

उनकी बात सुनते ही पुरकायस्थ एकदम खुशी से भर गया। उसने उनका कुशल-क्षेम पूछा और कहने लगा, "आचार्य जब एक गली में एक चबूतरे पर बैठ कर पाठ पढ़ाया करते थे तो मैं दूर खड़ा वह सब सुनता रहता था। मेरे मन में, बस, यही रहता कि यदि उनकी बातें राई-भर भी मैं ग्रहण कर पाया तो मेरा जन्म धन्य हो जायेगा।

"एक दिन उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और बोले—'पुरकायस्थ, ज्ञान-ग्रहण की तुम्हारी यह ललक मैं काफी समय से देख रहा हूं। तुम्हारी प्रज्ञा को लेकर तुम्हारे हमपेशा लोगों के बीच जो चर्चा चल रही है, उससे भी मैं परिचित हूं। एक-न-एक दिन ज्ञान के इस महासागर का मंथन करने के लिए मुझे तुम्हारी सहायता प्राप्त करनी पड़ेगी। क्या तुम मुझे वह सौभाग्य दोगे?' ब्रह्मभट्टारक ने मुझे आशीर्वाद देते हुए कहा।

"इसके बाद मुझे राजाश्रय मिल गया और मैं काशी नगरी छोड़कर यहां, अवंतीपुर, चला आया।" इस तरह पुरकायस्थ ने अपना परिचय दिया और ब्रह्मभट्टारक के संदेहों का समाधान भी जुटा दिया।

आखिर, दोनों शिष्यों ने पुरकायस्थ से आज्ञा ली और उज्जयिनी की ओर लौटने को हुए। उस समय पुरकायस्थ ने उन दोनों

से कहा, "श्रीमान बंधुओ, आचार्य के प्रश्नों का उत्तर मैंने अपनी कुल-विद्या के अनुभव के आधार पर दिया है। मैं नहीं जानता कि वे उत्तर शास्त्र की कसौटी पर खरे उतरेंगे या नहीं। मैंने पंडितों से सुन रखा है कि रसायन शास्त्र में सही समाधान पाप्त होते हैं। इस शास्त्र में मेरे बचपन का मित्र और आचार्य ब्रह्मभट्टारक का प्रिय शिष्य शांतिभूषण पारंगत है। जानने वाले यह बात बहुत अच्छी तरह जानते हैं। वह अब उज्जयिनी में रहता है। आप मेरी याचना उस तक पहुंचायें। मैं तुम लोगों से यही चाहता हूं।"

पुरकायस्थ की बात सुनकर शांडिल्य और च्यवन चकित रह गये। वे पुरकायस्थ से बोले कि वे शांतिभूषण के ही शिष्य हैं और उनके कार्य से ही पहले वे ब्रह्मभट्टारक के पास गये हैं और वहां से उन की बात पर वे यहां आये हैं।

आखिर, वे उज्जयिनी पहुंचे और उन्होंने अपने गुरु को वे सारी बातें बता दीं जो ब्रह्मभट्टारक ने कही थीं, और वे भी जो पुरकायस्थ ने कही थीं।

शांतिभूषण धीमे से मुस्करा दिया। कहने लगा, "लोग मुझे महान पंडित कहते हैं। फिर भी मैं कितनी बातें नहीं जानता, यह तुमने देख ही लिया है। इन्हें जानने के लिए तुम्हें कितना श्रम करना पड़ेगा, यह भी तुमने जान लिया है।"

शांतिभूषण ने अपनी बात जारी रखी। बोला, "गुरु और ग्रंथ अवश्य ज्ञान की खोज में सहायक होते हैं। फिर भी बहुत कुछ अज्ञात रह जाता है। इसलिए असली पंडित के लिए अनिवार्य है कि वह अज्ञात विषयों को जानने के लिए बराबर अन्वेषण करता रहे। इस तरह ज्ञान की खोज करने वाला व्यक्ति ही वास्तव में पंडित है।"

शांतिभूषण की बात में छिपा सत्य जानकर शांडिल्य और च्यवन ने वही मार्ग अपना लिया। वे सतत ज्ञान की खोज में लगे रहते। इसीलिए वे श्रेष्ठ पंडित कहलाये।

इतने में विभीषण वहां आ पहुंचा । उसे देखकर वानरों को लगा कि यह इंद्रजित् ही होगा । इसलिए वे वहां से तुरंत खिसक लिये ।

इस पर सुग्रीव ने जांबवान से कहा कि वह वानरों को बताये कि यह जो यहां आया है, वह इंद्रजित नहीं, विभीषण है ।

विभीषण राम-लक्ष्मण को ऐसी असहाय अवस्था में देखकर बहुत दुखी हुआ । उसकी आशा पर पानी फिर गया । वह तो यह सोचे बैठा था कि वह एक दिन लंका का राजा बनेगा ।

सुग्रीव ने विभीषण को अपने आलिंगन में ले लिया और बोला, "विभीषण, यह मत समझना कि रावण की जीत हो गयी है । तुम लंका के राजा अवश्य बनोगे । राम-लक्ष्मण की जान को कोई खतरा नहीं । वे मूर्छा से जब बाहर आयेंगे तो शत्रुओं का ज़रूर नाश करेंगे ।"

इसके बाद सुग्रीव अपने मामा सुषेण से बोला, "राम-लक्ष्मण जैसे ही मूर्छा से बाहर आयें, तुम इन्हें वानर-वीरों के साथ किष्किंधा ले जाओ । मैं रावण को सपरिवार नष्ट करके ही रहूंगा, और तभी चैन पाऊंगा जब मैं सीता को भी लौटा लाऊंगा ।"

सुग्रीव की बात सुनकर सुषेण सुग्रीव से बोला, "इससे पहले भी देव-दानवों के बीच युद्ध हुआ था । मैंने उसके बारे में सुन रखा है । राक्षसों के मायाजाल और प्रहारों से कई देव धराशायी हुए थे । कुछ देव मूर्छित

भी हो गये थे । तब देवों के गुरु बृहस्पति ने मृतसंजीवनी विद्या से उनकी चिकित्सा की थी ।

"सुना है, क्षीरसागर के पास पर्वतों में संजीवकरणी और विशल्यकरणी नाम के औषध मिलते हैं । पुरातन काल में वहीं क्षीरसागर का मंथन हुआ था । वहां, चंद्रपर्वत और द्रोणपर्वत भी हैं । इन्हीं पर्वतों पर ये औषध मिलते हैं । हनुमान को वहां तुरंत पहुंचना चाहिए, और वे औषध लाने चाहिए ।"

इतने में वहां बहुत तेज़ हवा बहने लगी । ऐसे लगा जैसे प्रलय आ गया है । वानरों ने देखा कि वहां गुरुत्मान् आ रहा है । गुरुत्मान् को वहां आते देख राम-लक्ष्मण को बाणों की तरह जकड़कर रखनेवाले सर्प भयभीत हो उठे। इस डर में उन सांपों ने राम और लक्ष्मण को छोड़ दिया और वहां से पलक मारते भागने को हुए ।

गरुत्मान् सीधे राम और लक्ष्मण के पास ही उतरा । उस ने एक बार राम और लक्ष्मण को प्यार से देखा, संतोष पाया,फिर उसने उनके चेहरे और समूचे शरीर को सहलाया । इससे गजब का असर हुआ और उनके सारे घाव भर गये और वे स्वस्थ हो कर खड़े हो गये ।

राम ने गरुत्मान् से कहा, "आपने हम पर बहुत कृपा की । आप ही के कारण हम बिलकुल स्वस्थ हो सके हैं । आप को देखकर हमें ऐसे लग रहा है जैसे कि हमने अपने पिता राजा दशरथ और पितामह राजा अज के दर्शन कर लिये हों । आपके दिव्य वस्त्राभूषण देखकर हमें आश्चर्य हो रहा है । वास्तव में आप हैं कौन?"

गरुत्मान् ने आनंद से विभोर होते हुए कहा, "हे राम, मैं तुम्हारा मित्र हूं, तुम्हारा प्रियवर हूं । मेरे-तुम्हारे प्राण एक समान हैं । मेरा नाम गरुत्मान् है । तुम दोनों की सहायता के लिए ही मैं यहां आया हूं । यह पाश सर्पों का ही है, और इन सर्पों को केवल मैं ही भगा सकता था । इसलिए तुम्हारी स्थिति का पता चलते ही मैं यहां चला आया । इस युद्ध में तुम्हें हर प्रकार की सावधानी बरतनी पड़ेगी । तुम राक्षसों पर किसी प्रकार भी विश्वास न करना ।"

फिर गरुत्मान् ने लौटने की आज्ञा चाही, "हे राम," उसने कहा, "अब मुझसे यह न पूछना कि मैं तुम्हारा किस प्रकार का मित्र हूं। युद्ध जीतने के बाद यह स्वयं ही तुम्हें पता चल जायेगा। युद्ध के बाद लंका नगरी तबाह हो जाएगी। फिर यहां लंका में केवल बच्चे और बूढ़े ही बचेंगे। रावण का अंत हो जायेगा और सीता तुम्हें वापस मिल जायेगी।" और यह कहकर गरुत्मान् आकाशमार्ग से वापस हो लिया।

राम-लक्ष्मण जब पहले की तरह स्वस्थ हो गये तो वानर आनंद से विभोर होकर सिंहनाद करने लगे। उधर भेरियां और मृदंग भी बज उठे।

वानरों ने फिर पेड़ उखाड़ने शुरू कर दिये और बडे-बडे पत्थर उठाकर तैयार होने लगे। लंका के द्वारों पर उन्होंने फिर घेरा डाल दिया। उस समय आधी रात बीत चुकी थी।

आधी रात के उस समय वानरों के इस सिंहनाद को रावण तथा अन्य राक्षसों ने भी सुना। रावण ने अपने मंत्रियों से कहा, "लगता है वानर बहुत खुश हैं। उन्हें तो राम-लक्ष्मण के लिए रोना चाहिए था। वे इस तरह खुश क्यों हैं, इस बात का फौरन पता लगाओ।" और यह कहकर रावण ने कुछ राक्षसों को वस्तु स्थिति का पता लगाने के लिए शत्रु सेना के बीच भेजा।

राक्षस किले के प्राचीरों पर चढ़ गये और वहां से उन्होंने देखा कि राम और लक्ष्मण बिलकुल स्वस्थ हैं और इसीलिए वानर इतने खुश हैं।

उन्होंने जो कुछ देखा था, वह सब रावण को कह सुनाया।

इंद्रजित के बाण-पाशों से राम-लक्ष्मण के मुक्त होने की सूचना पाकर रावण का चेहरा उतर गया, क्योंकि इसका अर्थ तो यह हुआ कि वासुकी जैसे बाण भी निष्कर्म रहे।

रावण ने अब धूम्राक्ष नामक राक्षस को बुलवाया और उससे कहा, "तुम ज़्यादा से ज़्यादा सेना अपने साथ ले जाओ और राम-लक्ष्मण का सफाया कर दो"

धूम्राक्ष ने रावण की आज्ञा का तुरंत पालन

अस्त्र-शस्त्र भी ऐसे प्रहार के सामने ठहर नहीं पा रहे थे । इसलिए वे वहां से अंधाधुंध भागने लगे ।

यह हालत देखकर धूम्राक्ष को चिंता हुई । उसने अब वानरों पर भीषण प्रहार करना शुरू कर दिया जिससे वानर अधिक संख्या में मरने लगे ।

धूम्राक्ष जब इस प्रकार वानर सेना को क्षति पहुंचा रहा था और उसे खदेड़ रहा था, तो हनुमान से यह सब सहा नहीं गया । उसे बहुत गुस्सा आया । उसने एक बहुत बड़ा पत्थर उठाया और धूम्राक्ष के रथ पर दे मारा । पत्थर का रथ पर गिरना था कि रथ चकनाचूर हो गया और धूम्राक्ष को अपनी जान बचाने के लिए लाचार होकर रथ से नीचे कूदना पड़ा ।

किया । उसने सेनाधिपति को सूचित किया कि वह युद्ध के लिए जा रहा है, इसलिए उसके लिए विशाल सेंना का प्रबंध होना चाहिए ।

धूम्राक्ष का सेनाधिपति को यह बतानां था कि तरह-तरह से अस्त्र-शस्त्रों से लैस सेना उसके साथ हो ली । इतनी विशाल सेना के साथ, और बढ़िया से बढ़िया रथ पर सवार होकर धूम्राक्ष पश्चिमी द्वार की दिशा में चल दिया ।

धूम्राक्ष को आते देख वानरों ने फिर सिंहनाद किया, और दोनों पक्षों के बीच युद्ध आरंभ हो गया । वानर उन पर पेड़ों और पत्थरों से प्रहार कर रहे थे जिससे राक्षसों को भारी क्षति पहुंच रही थी । उनके

हनुमान अब बड़ी-बड़ी शिलाओं से राक्षसों का नाश कर रहा था । अपना नाश इस तरह होता देख बहुत से राक्षस वहां से भाग खड़े हुए । इससे हनुमान को धूम्राक्ष पर सीधे प्रहार करने का अवसर मिल गया ।

धूम्राक्ष ने अपनी गदा से हनुमान के सर पर ज़ोर से प्रहार किया, लेकिन हनुमान् उस प्रहार से ज़रा भी विचलित नहीं हुआ, बल्कि उसने धूम्राक्ष पर एक बड़ी गंडशिला उठा कर दे मारी जिससे धूम्राक्ष बिलकुल छिन्नभिन्न हो गया । वहां इतना खून बहा जैसे खून की नदी उमड़ पड़ी हो । यह देखकर वानरों का उत्साह दुगुना हो गया और वे

राक्षसों पर पूरी ताकत से टूट पड़े ।

धूम्राक्ष की मृत्यु की खबर पाकर रावण बुरी तरह क्रुद्ध हो उठा । उसने वज्रदंष्ट्र नाम के राक्षस की ओर देखा और आदेश दिया, "अब तुम जाओ, फौरन । मुझे राम, सुग्रीव और वानरों के मरने की खबर मिलनी चाहिए ।"

वज्रदंष्ट्र मायावी राक्षस था । वह बहुत बड़ी सेना के साथ अस्त्रों और शस्त्रों से लैस रणभूमि की ओर बढ़ा । वह लंका नगरी के दक्षिणी द्वार से बाहर गया । वहां अंगद वानर सेनाओं के साथ तैयार खड़ा था ।

वानरों और राक्षसों के बीच जमकर युद्ध हुआ । राक्षसों ने वानरों को भारी क्षति पहुंचायी । अनेक वानरों का वध हुआ । इससे अंगद का चेहरा गुस्से से तमतमा गया । उसके भीतर क्रूरता उतर आयी । उसने बड़ी निर्दयता से राक्षसों का वध करना शुरू किया । उसका एक ही प्रहार कई राक्षसों की जान ले लेता था ।

अंगद के प्रहार से जब राक्षस इस बुरी तरह मरने लगे तो वज्रदंष्ट्र का क्रोध भी उमड़ पड़ा । वह वानर सेना पर अपने बाणों की वर्षा करने लगा । आखिर अंगद और वज्रदंष्ट्र आमने-सामने हुए । दोनों में द्वंद्व-युद्ध छिड़ गया । अंगद ने अपने एक ही प्रहार से वज्रदंष्ट्र के रथ को नष्ट कर डाला । तब वज्रदंष्ट्र अपनी गदा के साथ रथ से नीचे आ गया । उसे कुछ चोट भी आयी थी । इसलिए वह रथ से गिरकर

बेहोश पड़ा रहा, और फिर जैसे ही उसकी बेहोशी खत्म हुई, वैसे ही उसने अंगद पर अपनी गदा फेंकी । अंगद तो पहले ही सावधान था । इसलिए वह गदा के उस प्रहार से साफ बच गया । अब वज्रदंष्ट्र और अंगद के बीच मुष्टि-युद्ध शुरू हुआ । दोनों काफी देर तक लड़ते रहे । वे काफी थक गये थे । फिर वे घुटनों के बल बैठ गये । घुटनों के बल बैठना था कि अंगद उस पर बिजली की तरह टूट पड़ा । उसने तलवार से वज्रदंष्ट्र का सर काट दिया । वज्रदंष्ट्र का सर कटा देख वानर बहुत खुश हुए ।

वज्रदंष्ट्र की मृत्यु की खबर पाकर रावण को फिर बहुत गुस्सा आया । उसने अब अकंपन को सेना के साथ युद्ध करने केलिए

भेजा । अकंपन का रथ उत्तम श्रेणी का था । वह अपने रथ पर सवार होकर युद्ध स्थल की ओर चल पड़ा ।

अब राक्षसों और वानरों के बीच फिर युद्ध चल पड़ा था । दोनों तरफ काफी योद्धा मारे जा चुके थे । कुमुद, नल, मैंद और द्विविद नाम के वानर-वीर बड़े ही साहस के साथ राक्षसों का मुकाबला कर रहे थे ।

अकंपन ने उन वानरों को पहचाना और अपने रथ को ठीक उनकी दिशा में बढ़ा दिया । वानर उसके सामने टिक नहीं पा रहे थे । यह देखकर हनुमान आगे बढ़ा । हनुमान का आगे बढ़ना था कि अकंपन ने अपने बाणों की उस पर वर्षा शुरू कर दी । लेकिन हनुमान ने उन बाणों की ओर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया, बल्कि ज़ोर से सिंहनाद करते हुए धरती पर अपने पैर को पटका जिससे धरती कांप उठी । फिर उसने एक बहुत बड़ी शिला उठायी और अकंपन पर दे मारी ।

लेकिन अकंपन के बाण भी कम शक्तिशाली नहीं थे । उन्होंने हनुमान के हाथों की शिला को टुकड़े-टुकड़े कर दिया । इस पर हनुमान ने एक सालवृक्ष को उठाया और अकंपन के सर पर दे मारा । यह वार खाली नहीं गया । इसने अकंपन का काम तमाम कर दिया । वह धरती पर धराशायी हुआ पड़ा था ।

यह देखकर राक्षस डर गये । वे अपने हथियार वहीं छोड़कर भाग खड़े हुए । जिन वानरों ने राक्षसों का साहस के साथ अंत किया था, हनुमान ने उनका अभिनंदन किया । वानरों ने अकंपन जैसे राक्षस का अंत करनेवाले हनुमान की भरपूर प्रशंसा की । फिर सब वानरों ने मिलकर इस प्रकार सिंहनाद किया कि उसे सुननेवाले राक्षसों का दिल दहल उठा ।

अकंपन की मृत्यु की खबर पाकर रावण थोड़ी देर तक दुःखी रहा । फिर उसने अपने मंत्रियों के साथ विचार-विमर्श किया और अपनी सेना का जायज़ा लेने के लिए समूची लंका में इधर से उधर और उधर से इधर घूम गया । समूची लंका में राक्षसों के झंडे फहरा रहे थे और लंका के बाहर चारों ओर वानर सेना घेरा डाले दिखाई दे रही थी ।
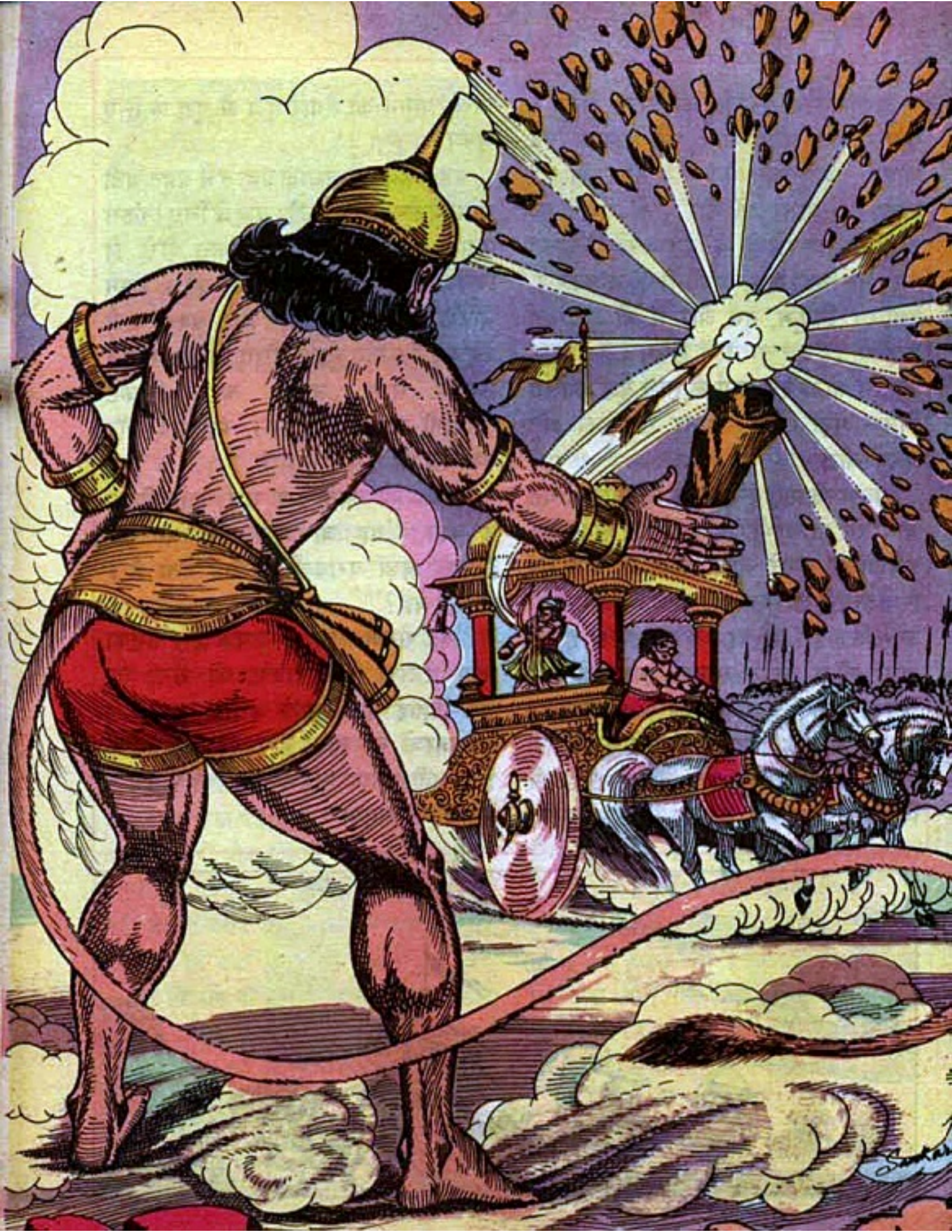
रावण सभा-स्थली को लौट आया। प्रहस्त वहीं खड़ा था। उसे देखकर वह बोला, "शत्रु सेना ने हमारे नगर को घेर रखा है। हमारे जो वीर उन्हें रोकने की कोशिश कर रहे थे, वे विफल रहे। उनके बस का यह काम नहीं है। कुंभकरण, इंद्रजित, निकुंभ, तुम और मैं भी अब इन शत्रुओं का अंत करने में असमर्थ हैं। फिर भी तुम आवश्यक सेना के साथ युद्ध के लिए निकल पड़ो। और वानर सेना का अंत करके लौटो।"

रावण की बात सुनकर प्रहस्त बोला, "यह बात हम पहले भी कई बार कर चुके हैं। इसे लेकर हमारे बीच बहस भी खूब हुई है। हमारी खैरियत इसी में है कि हम सीता को लौटा दें। मैं यह भी कह चुका हूं कि अगर सीता को न लौटाया गया तो युद्ध अवश्यंभावी है। हां, आपकी आज्ञा का पालन करना, आपकी इच्छा के सामने नतमस्तक रहना हमारा कर्त्तव्य है। हम इससे कभी विमुख नहीं होंगे। मैं युद्ध में आपके लिए प्राण त्यागने को तैयार हूं। मैं युद्ध के लिए ज़रूर जाऊंगा।"

यह कहकर सेनाध्यक्ष प्रहस्त ने बहुत बड़ी मात्रा में सेना जुटायी और युद्ध के लिए निकल पड़ा। इससे पहले उसने राक्षस वीरों की विजय के लिए यज्ञ और पूजा की। उसने भेरियां भी बजवायीं और श्रेष्ठ अश्वों वाले रथ पर बैठ कर युद्ध के लिए निकल पड़ा। उसके साथ उसके चार निकट सहयोगी-नरांतक, कुंभहन, महानाद और समुन्नत भी थे।

प्रहस्त को आते देख राम ने विभीषण से कहा, "वह जो अब चला आ रहा है, वह बड़ा पराक्रमी दिखाई देता है। कौन है वह?"

"वह रावण का सेना-नायक है। उसका नाम प्रहस्त है। रावण की सेना का एक-तिहाई भाग उसके अधीन रहता है। यह अस्त्रों का ज्ञाता है। महान पराक्रमी है। यही इसका परिचय है," विभीषण ने रावण को बताया।

आकाश टूटेगा नहीं

एक गांव में भीम नाम का एक व्यक्ति रहता था। वह बड़ा ही भोला था। वह मजदूरी करता और अपना पेट पालता। गांव के लोग उसे भोलाशंकर कहकर पुकारते।

एक रात भीम खाना खाकर खुले में अपनी खटिया बिछा कर लेट गया और आकाश की तरफ देखने लगा। उसके मन में एक विचार आया—लोग कहते हैं कि आकाश भगवान द्वारा संसार के लिए लगाया गया एक बहुत बड़ा पंडाल है। उसे टिकाये रखने के लिए चारों ओर खूंटियां भी रहती हैं, लेकिन इतने बड़े पंडाल की खूंटियां कहीं भी दिखई नहीं देती! अगर यह आसमान टूटकर गिर पड़ा तब तो बड़ा अनर्थ हो जायेगा।

इस विचार के मन में आते ही भीम मारे डर के घबरा उठा। उसे, दरअसल, डर इस बात का था कि आसमान टूट कर जब गिरेगा तो उसकी जान चली जायेगी।

घबराहट में भीम गांव के बाहर एक बड़े बरगद के निकट गया और वहीं बैठकर कुछ आश्वस्त महसूस करने लगा। उसका विचार था कि अगर आसमान टूटकर गिरा भी तो उसके टुकड़े पेड़ की डालियों में अटक जायेंगे और वह बच जायेगा।

रात भर वह वहीं बैठा रहा। सुबह हुई तो उसने किसी को रोककर पूछा, "हर पंडाल के चारों ओर कुछ खूंटे होते हैं। फिर आकाश जैसे इस विशाल पंडाल के खूंटे कहां हैं? अब फर्ज़ करो यह आकाश टूट कर गिरता है, तो क्या हम सब मर नहीं जायेंगे?"

लोगों को जब भीम के डर का पता चला तो वे सब हंसने लगे। उन्होंने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया।

अब भीम को लगने लगा कि वे लोग जो उसकी बात पर ध्यान नहीं दे रहे, ज़रूर

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

पगलाये हुए हैं । इसलिए उसने निर्णय लिया कि वह वहीं जाकर रहेगा जहां आकाश न हो, और वह वहां से चल दिया ।

गांव छोड़कर जब वह जंगल में से गुज़र रहा था तो उसे इक्का-दुक्का व्यक्ति ही उस रास्ते पर मिला । भीम ने उनमें से एक व्यक्ति को रोका और उसे अपने मन के डर की बात बताते हुए कहने लगा, "बताओ, वे खूंटे कहां हैं?"

उस व्यक्ति ने भीम की ओर बड़े गौर से देखा और कहने लगा, "क्या बक रहे हो? आकाश और खूंटे?" और इतना कहकर वह वहां से चल दिया ।
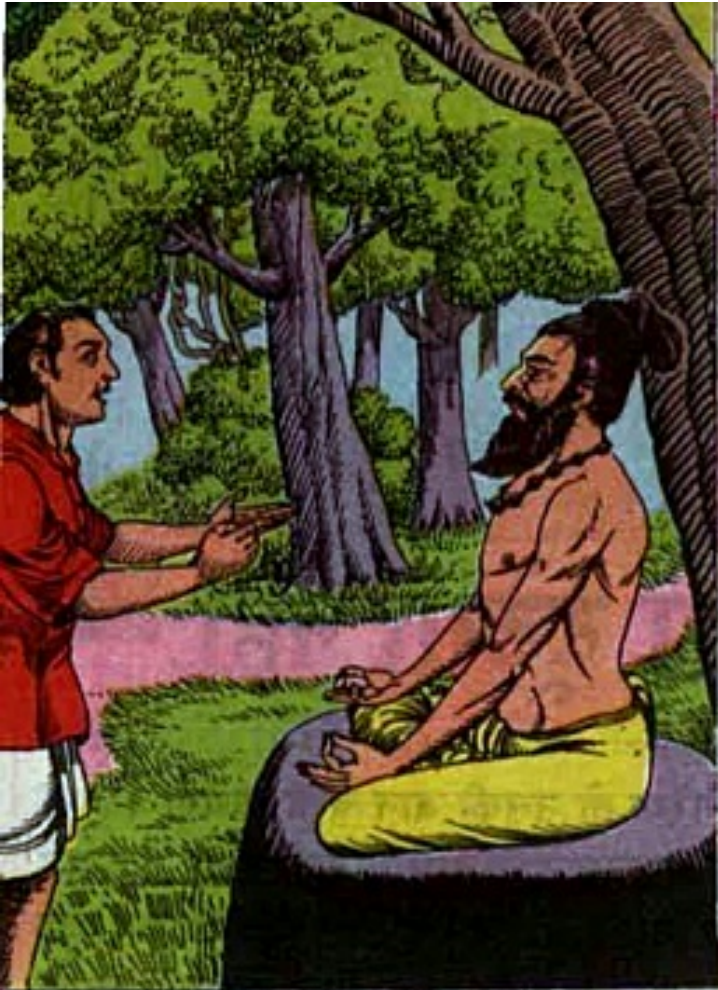
भीम बड़ा परेशान था । खैर, वह चलता रहा, चलता रहा । जंगल कहीं खत्म न हुआ और न ही कोई गांव उसे दीख पड़ा ।

एक जगह रुककर उसने अपना सर ऊपर की ओर उठाया । ऊपर कुछ पेड़ थे और पेड़ों के पार फिर वही आकाश था । उसे लगा शायद ऐसी जगह बहुत दूर है जहां आकाश न हो ।

रात होने तक वह चलता ही रहा । फिर रात बिताने के लिए वह एक पेड़ के नीचे रुक गया । वह पेड़ बहुत बड़ा थ । उसने सोचा अब अगर आकाश टूटकर गिरेगा भी तो पेड़ की डालें उसे रोक लेंगी ।

उस पेड़ के नीचे एक संन्यासी भी बैठा था । उसकी आँखें मुंदी हुई थीं । भीम के पांव की आहट पाकर उसने अपनी आँखें खोलीं और भीम की ओर देखा ।

भीम झट से बोला, "ओह! तो आप भी इसी डर से इस पेड़ के नीचे बैठे हैं कि जब आकाश टूटकर गिरेगा तो आप पर इसका कोई असर नहीं होगा ।"

संन्यासी ने जान लिया कि यह व्यक्ति बहुत भोला है । वह हंसते हुए बोला, "भला आसमान कैसे टूटेगा?"

"छोटे से पंडाल के भी चार खूंटे होते हैं । होते हैं या नहीं? अब यह इतना बड़ा पंडाल है और इसके एक भी खूंटा नहीं । यह कब तक ऐसे ही टिका रह सकता है?"

"ओह, तो यह बात है! मैं समझ गया, बेटा, मैं समझ गया । आसमान के भी खूंटे होते हैं । पर उनके बारे में कल सुबह तुम्हें बताऊंगा । अब तुम सो जाओ ।" संन्यासी

ने उसे सांत्वना देते हुए कहा ।

संन्यासी की बात पर यकीन करके भीम निश्चिंत होकर सो गया ।

सुबह हुई तो भीम नींद से जगा । उसे जगा देखकर संन्यासी ने कहा, "बेटा, तुम्हें यही डर है कि आकाश के खूंटे नहीं हैं? अब मैं तुम्हें एक रास्ता बताता हूं । तुम उसी रास्ते से जाओ । वहां तुम्हें एक गांव मिलेगा । वहां पहुंचकर तुम हर घर के सामने वहां के लोगों को खूब गालियां देना और फिर वहीं खड़े रहना । तुम्हें उन लोगों से भीख लेकर लौटना होगा ।"

भीम उसी गांव में पहुंचा और जैसा संन्यासी ने उसे बताया था, उसने वैसा ही किया । उसने वहां के लोगों को खूब जमकर गालियां दीं और फिर उनसे भीख मांगने लगा । उसे किसी ने भीख नहीं दी, बल्कि वे सब उसे पीटने को हुए । आखिर वह एक घर के सामने रुका और वहां भी उसने भीख मांगी, लेकिन उसे भीख देने कोई नहीं आया । तब भीम ने वहां फिर गालियां देनी शुरू कर दीं ।

भीम की गालियां सुनकर एक औरत जल्दी से घर से बाहर आयी और उससे बोली, "मैं जानती हूं तुम भूखे हो । मुझसे देर हो गयी । तुम्हारा गालियां देना उचित ही था । मैं सब समझती हूं ।" और भीम को भीख देकर वह घर के भीतर चली गयी ।

भीम जंगल को लौट गया । वहां उसने संन्यासी को सारी बात कह सुनायी ।

भीम की बात सुनकर संन्यासी हंस दिया । कहने लगा, "तुमने उसे गालियां दीं और फिर भी उस गृहिणी ने तुम्हें भिक्षा दी । तुम पर गुस्सा नहीं किया । लाखों-करोड़ों में ऐसे लोग, बस, एक-आध ही होते हैं । यही लोग इस आकाश के खूंटे हैं । पंडाल के कुछ ही खूंटे होते हैं, पर आकाश के अनेक खूंटे हैं । इसलिए यह आकाश कभी नहीं गिर सकता । तुम चिंता मत करो ।"

संन्यासी की बात भीम की समझ में आ गयी । उसने उसे साष्टांग प्रणाम किया और उसकी सेवा में वहीं उसके पास रहने लगा ।

थैले का कमाल

बात पुराने वक्तों की है। तब इटली में बेप्पोपिपेट्टा नाम का एक साहसी युवा सैनिक रहता था। एक दिन वह एक सुनसान जंगल में से होकर निकल रहा था। तब एकाएक उसने देखा कि वहां एक पेड़ के नीचे दो चोर एक सौदागर को अपने शिकंजे में जकड़े बुरी तरह पीट रहे हैं। बेप्पो शेर की तरह उन चोरों पर झपटा। चोर उसके सामने टिक नहीं पाये, और वहां से फौरन नौ-दो ग्यारह हो गये। खैर, सौदागर को किसी प्रकार की कोई चोट नहीं आयी थी। इसलिए बेप्पो बिना उससे परिचय प्राप्त किये आगे बढ़ गया।

चोरों के हाथों पिट रहा वह व्यक्ति छद्म वेश में घूमने वाला उस देश का राजा था। उसे बेप्पो के साहस पर गर्व हुआ। राजधानी लौटकर उसने बेप्पो को बुलवा भेजा। जब बेप्पो उसके सामने हाज़िर हुआ तो उसने कहा, "आज से तुम अपने आप को एक स्वतंत्र सैनिक समझो। तुम कहीं भी घूमने-फिरने के लिए आज़ाद हो। अब तुम्हारा तमाम खर्च, आजीवन, राज्य उठायेगा।"

बेप्पो, सैनिक के नाते आज तक वह जो सैनिक-थैला ढोता रहा था, उससे मुक्त था। अब वह बिलकुल निश्चिंत था।

एक बार उसे एक वृद्ध सैनिक ने देखा और पूछा, "तुम कहते हो कि तुम सैनिक हो। तब तुम्हारा सैनिक-थैला कहां है?"

"बेशक, मैं एक सैनिक हूं, पर मैं सैनिक थैले का बोझ ढोने से मुक्त हूं। मेरे पालन-पोषण की सारी ज़िम्मेदारी राजा ने ले ली है।" बेप्पो ने उत्तर दिया।

"तुम बड़े भाग्यशाली हो। लो, मैं तुम्हें अपना थैला देता हूं। यह कमाल का थैला है। इसका मुंह खोलकर तुम जिस किसी

इटली की लोककथा

से कहोगे कि इसमें कूद पड़े,वह फौरन बिना कुछ सोचे-समझे इसमें कूद पड़ेगा। वह इसमें से तभी बाहर आ सकेगा जब तुम इसका मुंह फिर से खोलेगे।" यह कहकर बूढ़े सैनिक ने अपना थैला बेप्पो को सौंप दिया।

बेप्पो को उस थैले का कमाल परखने का जल्दी ही अवसर मिल गया। दो व्यक्ति उससे लड़ने पर उतारू हो रहे थे। उसने थैले का मुंह खोला और बोला, "कूदो!" और वे दोनों व्यक्ति सचमुच उस थैले में कूद पड़े, और बाहर न आ पाये जब तक कि बेप्पो ने उन्हें मुक्त नहीं किया।

दो वर्ष तक बेप्पो अपने गांव में ही रहा। अब वहां रहते-रहते उसका दिल भर गया था। इसलिए वह राजधानी को लौट आया। राजधानी उसे उदास नज़र आ रही थी। हर घर के बाहर उसे काला कपड़ा लटकता दीख पड़ा। उससे रहा नहीं गया। उसने झट से लोगों से इधर-उधर पूछना शुरू कर दिया। इस पर कुछ लोगों ने उसे बताया, "क्या अभी तक तुम्हें कुछ पता नहीं? आज आधी रात के वक्त यहां शैतान आनेवाला है। वह राजकुमारी को उठाकर ले जायेगा। कुछ वर्ष पहले इस शैतान से राजा का एक समझौता हुआ था और राजा ने उस समझौते पर हस्ताक्षर भी कर दिये थे। दरअसल राजा को यह पता ही नहीं चला था कि उस कागज पर लिखा क्या है। उसने ऐसे ही उस कागज पर हस्ताक्षर कर दिये थे। यह तो उसे अभी पता चला कि उस

समझौते के अनुसार उसे अपनी बेटी को शैतान के हाथों सौंपना पड़ेगा।"

अब बेप्पो को असलियत का पता चला। वह फौरन राजा के यहां पहुंचा और उससे बोला, "आपने मेरे प्रति जो इतना उपकार किया है, उसके बदले मैं कुछ करना चाहता हूं। मैं राजकुमारी को शैतान के चंगुल से बचाऊंगा। आप मुझे इजाज़त दें।"

"मैं तुम्हारे साहस से अच्छी तरह परिचित हूं। लेकिन स्थिति ऐसी है कि तुम या कोई और भी इससे निपट नहीं सकता। धोखे से ही सही, मैंने उस कागज़ पर हस्ताक्षर किये थे," राजा ने हताश-भरे स्वर में कहा।

"उसने हमारे साथ धोखा किया था तो हम भी उसके साथ धोखा कर सकते हैं।

आप, जिस कमरे में राजकुमारी है, उसके ऐन बगल वाले कमरे में मेरे रहने का इंतज़ाम करवा दीजिए। वह कमरा इस प्रकार हो कि उसके सामने से गुज़र कर शैतान को राजकुमारी के कमरे तक जाना पड़े। मुझे एक मेज, कुछ कागज़, स्याही और कलम चाहिए, और साथ में एक लाठी भी। इस सब का इंतज़ाम हो जायेगा-तो बाकी मैं सब खुद संभाल लूंगा," बेप्पो ने कहा।

लेकिन राजा को रत्ती-भर भी उम्मीद नहीं थी कि बेप्पो इतनी बड़ी मुसीबत से टक्कर ले सकेगा। फिर भी उसने उसके लिए उन सब चीजों की व्यवस्था करवा दी। बेप्पो राजकुमारी के बगल वाले कमरे के दरवाज़े पर, मेज पर थैले का मुंह खोले, तैयार-बर-तैयार खड़ा था। वह वहां शैतान के आने का इंतज़ार कर रहा था।

ठीक आधी रात के वक्त धरती में कंपन हुआ। कहीं बिजली गिरी, कहीं उसकी गरज सुनाई दी। वातावरण में एक खास तरह की गंध फैल गयी थी। शैतान टूटे तारे की तरह बड़ी तेज़ गति से राजभवन की तरफ बढ़ता आ रहा था। राजभवन पहुंचकर जैसे ही वह राजकुमारी के कमरे की ओर बढ़ने को हुआ, बेप्पो ने थैले की तरफ इशारा करते हुए उससे कहा, "कूदो।" और शैतान फौरन उस थैले में कूद गया। शैतान का थैले में कूदाना था कि बेप्पो ने उसका मुंह बंद कर दिया और चुपचाप खड़ा तमाशा देखने लगा।

थैले में अपने को कैद पाकर शैतान कुछ देर तक खूब चिल्लाता रहा। जब वह चुप हुआ तो बेप्पो ने उससे पूछा, "इस ओर कैसे आये थे?"

"यह मैं तुम्हें क्यों बताऊं?" शैतान ने थैले में छटपटाते हुए कहा।

"मुझे नहीं बताओगे तो किसे बताओगे? मैं जानता हूं कि तुम राजकुमारी को उठाकर ले जाने के लिए आये हो। लेकिन मैं तुम्हारी कोशिश कामयाब होने नहीं दूंगा। मुझे वचन दो कि तुम राजकुमारी को उठा कर नहीं ले जाओगे और अपनी राह चलते बनोगे। वरना देख लो, तुम्हारा क्या हश्र होगा। तमाम उम्र इसी थैले में बंद सड़ते रहोगे," बेप्पो ने उसे धमकाया।

"यह सब कुछ होने वाला नहीं। आज आधी रात के बाद से राजकुमारी मेरी है। यह बात राजा ने स्वयं मुझ से हुए समझौते के तहत कही थी। उसने उस समझौते पर हस्ताक्षर भी किये थे," शैतान ने कहा।

"मैं जानता हूं। तुम्हें वह समझौते वाला कागज फाड़ देना होगा। फाड़ोगे कि नहीं? यह मैं तुमसे आखिरी बार कह रहा हूं।" बेप्पो ने आदेश के स्वर में कहा।

"यह मेरा ज़ाती मामला है। तुम इसमें दखल नहीं दोगे। मुझे थैले से बाहर निकालो," शैतान ने गुर्राते हुए कहा।

"तो ठीक है, मैं अपना काम करता हूं।" बेप्पो ने उत्तर दिया, और फिर लाठी से उस थैले पर वार करने लगा।

शैतान तो नरक का राजा था। वह केवल दूसरों को कष्ट देना जानता था। उसने खुद कभी कष्ट नहीं सहे थे। वह पीड़ा से बुरी तरह कराहने लगा।

जब उससे लाठी की चोट और नहीं सही गयी तो वह बेप्पो की बात मानने को तैयार हो गया। उसने कहा कि अगर उसे थैले से बाहर आने दिया जायेगा तो वह बेप्पो की बात मानकर राजकुमारी को भूल जायेगा।

"तुम तो कागज़ात पर हस्ताक्षर करवाते हो न! तब मैं तुम्हारी बात पर विश्वास कैसे करूं? मैं यह कागज़ तैयार कर रहा हूं। तुम्हें सिर्फ उस पर हस्ताक्षर करने होंगे। तुम थैले में से केवल अपना हाथ ही बाहर निकालोगे। हस्ताक्षर कर दोगे तभी तुम्हारी रिहाई मुमकिन है।" बेप्पो

ने सहज होकर उत्तर दिया ।

मरता क्या न करता? शैतान ने बेप्पो की हर शर्त मान ली । बेप्पो ने कागज़ तैयार कर लिया था । उसने थैले का मुंह थोड़ा-सा खोला ताकि शैतान केवल अपना हाथ ही बाहर निकाल सके । शैतान ने उस कागज़ पर हस्ताक्षर कर दिये । इस पर बेप्पो ने अपने थैले का मुंह पूरा खोल दिया और शैतान को बाहर आने दिया । वातावरण में एक बार फिर वही गंध फैल गयी । फिर वैसी ही बिजली चमकी और वैसे ही धरती में कंपन हुआ और शैतान गायब हो गया ।
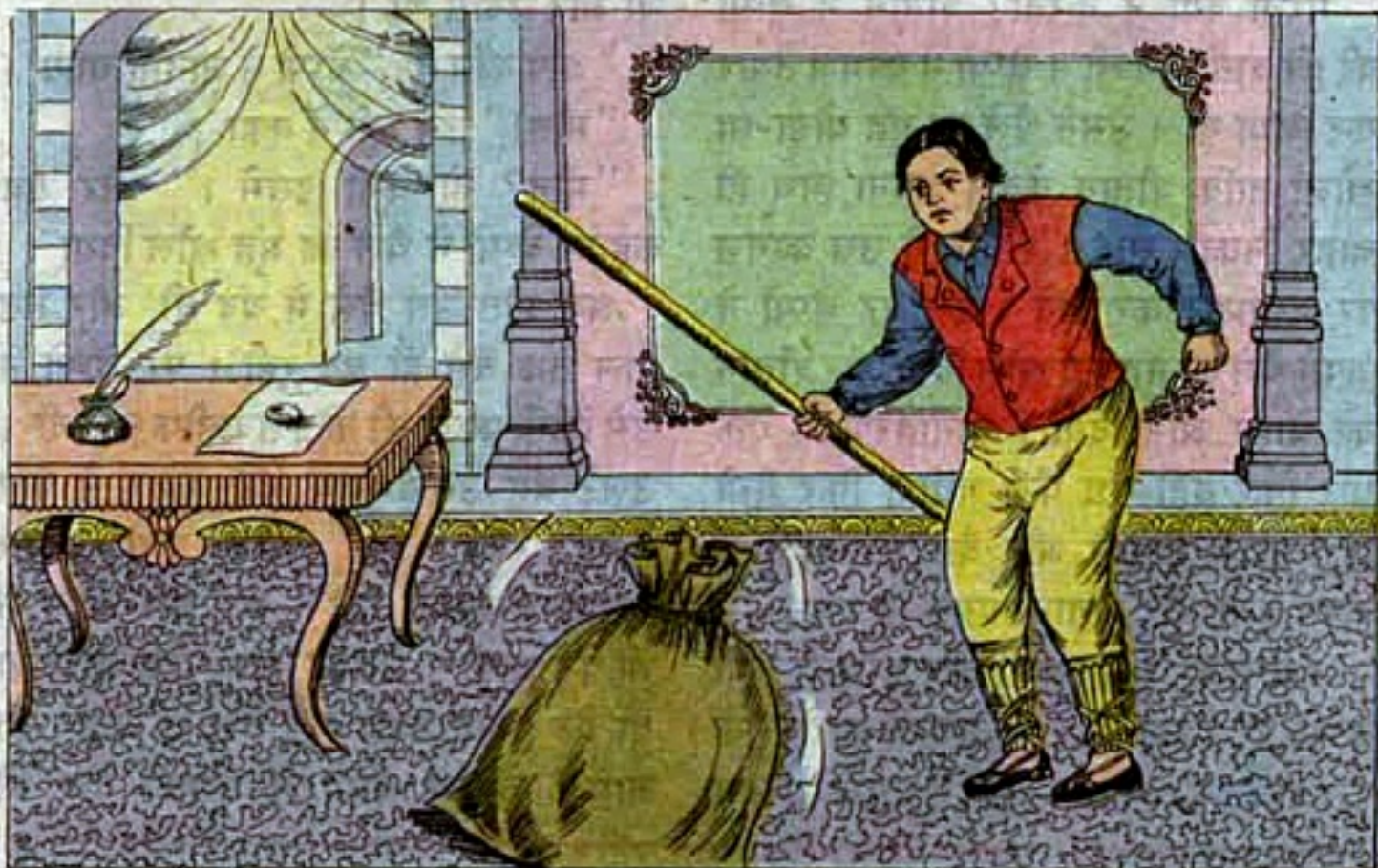
अब राजा, राजकुमारी और दरबारी सभी बेप्पो पर फिदा थे । वे उसकी तारीफ के पुल बांधते न अघाते । राजा ने उसके सम्मान में एक बहुत बड़ा भोज दिया और फिर उसे विदा कर दिया ।

बेप्पो अब तक काफी घूम चुका था । घूमने से अब उसे ऊब होने लगी थी । वह चाहने लगा था कि वह किसी मनपसंद जगह पर बस जाये । ऐसी जगह की वह बराबर तलाश में था । घूमते-घूमते एकाएक उसे एक नदी के किनारे एक सुंदर-सी कुटिया दीख पड़ी । उस कुटिया के चारों ओर फल-फूल वाले पौधे थे । वहां की दृश्यावली भी सुंदर थी । उसने निश्चय किया कि वह जब तक जीवित रहेगा, वहीं पर रहेगा ।

उसने कुछ वर्ष वहीं बिता दिये । काफी सुख-चैन से उसका समय बीत रहा था । एक दिन उसके यहां एक स्त्री आयी, उसे वह जानता नहीं था । वह काले रंग की थी और उदास थी ।

"आप कौन हैं?" बेप्पो ने जानना चाहा ।

"मौत!" उस स्त्री ने कहा ।

"मौत? तो कूदो इसमें ।" और यह कहकर बेप्पो ने थैले का मुंह खोल दिया ।

अब मौत उस थैले में बंद थी, और डेढ़ साल तक वैसे ही बंद रही । पर बेप्पो ने उसे किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं दी । उलटे वह उसके साथ बड़े आदर से पेश आता रहा । हां, मौत उसे ज़रूर डराती-धमकाती रही । कई बार बहस में भी पड़ जाती । उसकी, बस, यही कोशिश थी कि किसी तरह वह थैले से बाहर आ जाये । लेकिन बेप्पो ने उसकी एक भी

चाल चलने नहीं दी ।

जब तक मौत उस थैले में बंद रही, किसी भी प्राणी की मृत्यु नहीं हुई । जो आज या कल मरने को थे, वे भी ज़िंदा रहे । दुर्घटनाएं होती रहीं, युद्ध भी होते रहे, लेकिन मरा कोई भी नहीं ।

यह सब देखकर मौत को परेशानी हुई । उसने बेप्पो को कई प्रकार से समझाने की कोशिश की कि यदि मृत्यु नहीं होगी तो जीने का मज़ा जाता रहेगा । अब यदि कोई बहुत बूढ़ा हो जाये या किसी लंबी बीमारी से ग्रस्त हो तो उसके लिए जीवन दूभर हो जाता है । ऐसे व्यक्ति के लिए मौत ही एक रास्ता होता है । यदि केवल जन्म ही होते रहे और मृत्यु रुक गयी तो इस संसार में कहीं खड़े होने की जगह नहीं बचेगी ।

बेप्पो को मानना पड़ा कि मौत जो कह रही है, उसमें सच्चाई है । बहरहाल, उसने मौत से वचन लिया कि जब तक वह उसे न बुलाये, वह उसके पास फटकेगी भी नहीं । मौत ने जब वचन दे दिया तो बेप्पो ने उसे मुक्त कर दिया ।

मुक्त होते ही मौत ने अपने वे सब काम पूरे करने शुरू कर दिये जो अब तक स्थगित पड़े थे । युद्ध और बीमारी से हजारों-लाखों लोगों की मृत्यु होने लगी ।

बेप्पो अब तक बहुत जी लिया था । उसे अब इस ज़िंदगी से भी ऊब होने लगी थी । उसके सब मित्र अब तक चल बसे थे, मित्रों की संतानों भी चल बसी थीं, बल्कि संताने की संतानें भी चल बसी थीं । राजा और उसकी बेटी भी चल बसे थे । इसलिए बेप्पो ने मौत को खबर भिजवायी कि वह अब आकर उसे ले जाये ।

मौत को जब यह खबर मिली तो वह घबरा गयी । बोली, "वह आदमी जहां कहीं भी रहता है, मैं उसके आस-पास भी नहीं फटकूंगी ।"

"बड़ी कृतघ्न है यह मौत । उसे थैले में ही बंद करके रखा होता तो ठीक रहता । अब तक उसका दिमाग ठिकाने आ गया होता ।" बेप्पो के मुंह से निकला ।

मौत ने बेप्पो के शरीर को आत्मा से अलग करने से इनकार किया था, इसलिए बेप्पो के पास एक ही रास्ता बच था कि

वह स्वर्ग या नरक स्वयं, सशरीर ही जाये । उसे यह भी लगा कि शायद स्वर्ग में उसके लिए स्थान न हो । इसलिए वह सीधे ही नरक की ओर चल दिया और वहां पहुंचकर उसने नरक के द्वार खटखटाये ।

जब नरक के राजा शैतान को पता चला कि वही थैले वाला व्यक्ति वहां आ पहुंचा है, तो उसने अपने अनुचरों को आदेश दिया कि उसे भीतर आने नहीं दिया जाये, उसकी खूब पिटाई की जाये और पिटाई करते-करते उसे यहां से दूर धकेल दिया जाये ।

शैतान के अनुचरों ने वैसा ही किया ।

मजबूर होकर बेप्पो अब स्वर्ग पहुंचा और वहां के द्वारपाल से उसने अनुनय किया कि उसे भीतर आने दिया जाये । द्वारपाल ने उत्तर दिया कि वह ईश्वर से पूछकर ही उसे भीतर आने देगा ।

द्वारपाल जैसे ही ईश्वर से पूछने के लिए वहां से हटा, बेप्पो ने अपनी टोपी चारदीवारी के ऊपर से स्वर्ग के उद्यान में फेंक दी । इतने में द्वारपाल लौटा और उसने आकर कहा, "ईश्वर ने तुम्हें भीतर आने की इजाज़त नहीं दी । तुमने अपने जीवन में केवल एक ही अच्छा काम किया था और वह था शैतान को पीटना । इतनी सी बात के लिए तुम्हें स्वर्ग में आने की इजाज़त नहीं दी जा सकती ।"

"तुम ठीक कहते हो, पर मेरी टोपी भीतर गिर गयी है । उसे तो ले लेने दो!" बेप्पो ने प्रार्थना के स्वर में कहा ।

"ठीक है, ले सकते हो ।" द्वारपाल ने हामी भर दी ।

बेप्पो स्वर्ग के भीतर गया और अपनी टोपी पर वहीं जमकर बैठ गया । वहां से उठा नहीं । फिर द्वारपाल से बोला, "मैं अपनी जगह पर बैठा हूं । कानूनन यह जगह मेरी है । तुम मुझे यहां से हटा नहीं सकते ।"

होते-होते यह बात ईश्वर तक पहुंची । उसने कहा, "स्वर्ग में यदि किसी को इंच भर जगह भी मिल जाती है, तो समझ लो उसे पूरा स्वर्ग मिल गया । अब उसे यहीं रहने दो ।"

देखते ही देखते बढ़ गया

थाइलैंड, मलेशिया तथा इंडोनेशिया जैसे दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में बहुत बड़े-बड़े बांस होते हैं जो देखते ही देखते बड़े हो जाते हैं। २४ घंटों में एक मीटर बढ़ते हैं। उत्तर-पूर्व भारत में ऐसे बांस हैं जो छः से आठ हफ्तों के भीतर अपने पर एक छल्ला बना लेते हैं। एक छल्ले और दूसरे छल्ले के बीच की दूरी एक मीटर से कुछ ही कम होती है।

पूर्वाभास

विश्वास किया जाता है कि पशुओं में कुछ ऐसी क्षमता होती है जिससे उन्हें आनेवाली प्राकृतिक विपदा का आभास हो जाता है। उदाहरण के लिए मछलियों को भूकंप, तूफान और ज्वालामुखी के फटने का बहुत पहले से ही पता चल जाता है। जैली फिश नाम की मछली को लगभग पंद्रह घंटे पहले तूफान के आने का पता चल जाता है जिससे वह समुद्रतट को छोड़कर समुद्र के बीच गहरे में चली जाती है। लेकिन इसके विपरीत गहरे समुद्र में रहने वाली मछली किसी भी विपदा का संकेत पाकर समुद्र की सतह पर आ जाती है। जापान में तो भूकंप आते ही रहते हैं। इसलिए जलाशय में रखी मछलियां कंपन होते से कई घंटे पहले ही उपर-नीचे भागना शुरू कर देती हैं।

दीमक के पहाड़

दीमक द्वारा बनाये गये बमीटा भूमि पर टीलों की तरह दिखाई देते हैं। कुछ-कुछ टीले तो सात मीटर, यानी इक्कीस फुट की ऊंचाई पा लेते हैं। दीमक के लिए तो यह एवरेस्ट पहाड़ ही हो गया न!

Don't you owe the
See my tail
It's out of a
Fairy Tale
Nice 'n' funny
I'm a Bunny
Foxy is my name
But I'm oh-so tame
Your Bear Hugs
are warmer
than mine
Tonight

ittle one a cuddles?
Give the Li'l Panda a Handa
No carrots to eat But I'm a treat
The
CHANDAMAMA
Collection of Soft Toys
CHANDAMAMA TOYTRONIX

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां अगस्त १९९२ के अंक में प्रकाशित की जाएंगी।

M. Natarajan

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० जून '९२ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) १०० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

अप्रैल १९९२ की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : बहुत कठिन है, डगर हमारी!

द्वितीय फोटो : कभी न मैंने, हिम्मत हारी!!

प्रेषिका : कु. रितु अग्रवाल, ६/३४५, कोठी केवल सहाय, बेलनगंज, आगरा-४ (उ.प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. ५०/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी।

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.